अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

जबलपुर 2023, महावीर जयंती पर आचार्य भगवन् के सान्निध्य में निकाली गई शोभायात्रा का दृश्य।

वीर निर्वाण संवत् - 2549
चैत्र शुक्ल, वि.सं. 2080, मार्च 2023
अंक : त्रेसठ
वर्ष : सत्रह

आचार्यश्री आर्जवसागरजी का आशीर्वाद लेते हुये भारत विकास परिषद् राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुरेश जी जैन आरएसएस, दिल्ली।

2023 सतना में आचार्य पदारोहण दिवस के शुभ पावनअवसर पर गुरुदेव का पाद प्रक्षालन करते हुये संघस्थ मुनिराज।

नौ वें आचार्य दिवस पर सतना नगर के ट्रस्टीगण आचार्य गुरुदेव आर्जवसागर जी का पादप्रक्षालन करते हुये।

पनागर में आचार्य भगवन् को आहार देती हुई पूज्य मुनिश्री संभवसागरजी महाराज की गृहस्थावस्था की माँ।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी के सान्निधि में शिवनगर जबलपुर में आयोजित श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान के दौरान ॐ योग ध्यान करते हुये श्रावकगण।

शिवनगर जबलपुर में पूर्णायु के ब्र.गण आचार्यश्री आजर्वसागरजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त कर आयुर्वेद के संबंध में मार्गदर्शन लेते हुये।

आचार्य भगवन् आर्जवसागरजी का शुभाशीष प्राप्त करते हुये मुनिश्री वीरसागरजी मुनिराज के गृहस्थावस्था के पिताजी।

शिवनगर में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान के मध्य पधारी लार्डगंज कमेटी आचार्य भगवन् से निवेदन करती हुई।

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित
आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ।

• परामर्शदाता •
प्राचार्य डॉ. शीतलचंद जैन, जयपुर
मो. 9414783707, 8505070927

। सम्पादक ।
डॉ. अजित कुमार जैन,
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
मो. : 7222963457, व्हाट्सएप: 9425601161
email : bhav.vigyan@gmail.com

• प्रबंध सम्पादक •
इंजीनियर शोभित जैन, एम. टेक.
'आर्जव छाया', पारस नगर, सागर नाका
दमोह मो. 8989459635

• सम्पादक मंडल •
बहिन इंजी. ऋषिका जैन, दमोह (म.प्र.)
डॉ. प्रो. सुधीर जैन, भोपाल (म.प्र.)
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), इंदौर (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)
पत्रकार भानुकुमार जैन, इंदौर (म.प्र.)

• प्रकाशक •
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा
सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 मो.: 9479978084

• आजीवन सदस्यता शुल्क •

शिरोमणी संरक्षक	:	50,000 से अधिक
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3,100
आजीवन (स्थायी)सदस्यता	:	1,500

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-सत्रह
अंक - त्रेसठ

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. आगम-अनुयोग [प्रश्नोत्तर-प्रदीप]	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	2
2. सिद्धांत-भूषण पद हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र एवं नियमावली	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	14
3. श्रावकों के चार धर्म	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	16
4. दीक्षार्थी परिचय ब्र. डॉ. संजय भैया, गंजबासौदा	-	27
5. 'तीर्थोदय काव्य' में ध्यान व सामायिक का महत्व	- प्रो.(डॉ.) सुधीर जैन	28
6. सदाचार और सद्विचार का स्रोत है 'तीर्थोदय काव्य'	- डॉ. देवेन्द्र जैन (मण्डीदीप वाले)	32
7. दीक्षार्थी परिचय ब्र. संजय भैया, विदिशा	-	34
8. जिनशासन की महिमा	- ब्र.अशोक जैन, जबलपुर	35
9. समाचार		38

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु भाव-विज्ञान धार्मिक परीक्षा बोर्ड, भोपाल द्वारा स्वीकृत

आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित

आगम-अनुयोग

[प्रश्नोत्तर-प्रदीप]

चरणानुयोग

प्र.1825 कर्म-उदय किसे कहते हैं?

उत्तर द्रव्य, क्षेत्र काल और भाव के अनुसार कर्मों के फल का प्राप्त होना उदय है या स्थिति का क्षय होना या कर्म स्कन्धों का अपना फल देकर झड़ जाना उदय कहलाता है।

प्र.1826 उदय त्रिभङ्गी किसे कहते हैं?

उत्तर उदय व्युच्छित्ति, उदय और अनुदय को उदय त्रिभङ्गी कहते हैं।

प्र.1827 कौन-कौन से गुणस्थानों में कितनी-कितनी प्रकृतियों का अनुदय होता है?

उत्तर पहले गुण स्थान में 5, दूसरे गुण स्थान में 11, तीसरे गुणस्थान में 22, चौथे गुणस्थान में 18, पाँचवें गुणस्थान में 35, छठे गुणस्थान में 41, सातवें गुणस्थान में 46, आठवें गुण स्थान में 50, नौवें गुणस्थान में 56, दसवें गुणस्थान में 62, ग्यारहवें गुणस्थान में 63, बारहवें गुणस्थान में 65, तेरहवें गुणस्थान में 80 और चौदहवें गुणस्थान में 110 प्रकृतियों का अनुदय होता है।

प्र.1828 किस कर्म-प्रकृति का उदय किस गुणस्थान में होता है?

उत्तर आहारक शरीर और आहारक शरीरांगोपांग का उदय छठे गुणस्थान में, तीर्थंकर-प्रकृति का केवली के तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में, सम्यङ्मिथ्यात्व का तृतीय गुणस्थान में, सम्यक्त्व प्रकृति का वेदक (क्षयोपशमिक) सम्यग्दृष्टि के चतुर्थ गुणस्थान से लेकर सप्तम गुणस्थान तक आनुपूर्वी का उदय प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ गुणस्थान में, अनन्तानुबन्धी का उदय प्रथम, द्वितीय गुणस्थान में, अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क का उदय प्रथम से चतुर्थ गुणस्थान तक, प्रत्याख्यानावरण चतुष्क का उदय प्रथम से पञ्चम गुणस्थान तक, संज्वलन क्रोध, मान, माया का उदय प्रथम से नवम गुणस्थान तक और संज्वलन लोभ का प्रथम से लेकर दसम गुणस्थान तक नरकायु और देवायु का उदय प्रथम से लेकर चतुर्थ गुणस्थान तक, तिर्यगायु का उदय प्रथम से लेकर पञ्चम गुणस्थान तक, और मनुष्यायु का उदय प्रारम्भ (प्रथम) से लेकर सभी गुणस्थानों में होता है। सासादन गुणस्थान में मरा हुआ जीव नरक गति में उत्पन्न नहीं होता अतः उस जीव के नरकगत्यानुपूर्वी का उदय नहीं होता। शेष कर्म प्रकृतियों का उदय मिथ्यात्वादि गुणस्थानों में अपनी-अपनी उदय व्युच्छित्ति के अन्तिम समय तक होता है।

प्र.1829 किस गुणस्थान में कितनी कर्म प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है?

उत्तर अभेद विवक्षा से मिथ्यादृष्टि आदि चौदह गुणस्थानों में क्रम से पहले गुणस्थान में 10, दूसरे गुणस्थान

में 4, तीसरे गुणस्थान में 1, चौथे गुणस्थान में 17, पांचवें गुणस्थान में 8, छठे गुणस्थान में 5, सातवें गुणस्थान में 4, आठवें गुणस्थान में 6, नौवें गुणस्थान में 6, दसवें गुणस्थान में 1, ग्यारहवें गुणस्थान में 2, बारहवें गुणस्थान में (2,14), तेरहवें गुणस्थान में 29 और चौदहवें गुणस्थान में 13 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1830 षट्खण्डागम ग्रन्थानुसार (भूतबली आचार्यानुसार) किस गुणस्थान में कितनी कर्म प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है?

उत्तर षटखण्डागम ग्रन्थानुसार (भूतबली आचार्यानुसार) मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानों में क्रम से पहले गुणस्थान में 5, दूसरे गुणस्थान में 9, तीसरे गुणस्थान में 1, चौथे गुणस्थान में 17, पाँचवें गुणस्थान में 8, छठे गुणस्थान में 5, सातवें गुणस्थान में 4, आठवें गुणस्थान में 6, नौवें गुणस्थान में 6, दसवें गुणस्थान में 1, ग्यारहवें गुणस्थान में 2, बारहवें गुणस्थान में 16, तेरहवें गुणस्थान में 30 और चौदहवें गुणस्थान में 12 कर्म प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है (क.दी. भा.2)

प्र.1831 किन्हीं आचार्यों और भूतबली आचार्य इन दोनों पक्षों में कर्मों की उदय व्युच्छित्ति सम्बन्धी विवक्षा भेद क्या है?

उत्तर किन्हीं आचार्यों के मत से एकेन्द्रिय और विकलत्रय में सासादन गुणस्थान नहीं होता, अतः एकेन्द्रिय, स्थावर और द्वीन्द्रियादि तीन जातियाँ, इन 5 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति पहले गुणस्थान में ही हो जाती है। फलस्वरूप पहले गुणस्थान में 10 और दूसरे गुणस्थान में 4 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है। बारहवें गुणस्थान के उपान्त्य समय में 2 की और अन्त्य समय में 14 की, दोनों मिलाकर 16 की व्युच्छित्ति कही गई है। चौदहवें गुणस्थान में परस्पर विरोधी होने से साता-असाता वेदनीय दोनों का एक साथ उदय नहीं होता अतः 1 की व्युच्छित्ति तेरहवें में और 1 की चौदहवें में मानी गई है परन्तु नाना जीवों की अपेक्षा दोनों का उदय संभव है, अतः 29, 13 और 30, 12 का विकल्प बन जाता है। यहाँ इस कृति में भूतबली आचार्य के मतानुसार उदय त्रिभंगी का वर्णन किया गया है।

प्र.1832 मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 5 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण इन पाँच प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है। अर्थात् द्वितीयादि गुणस्थानों में इनका उदय नहीं रहता।

प्र.1833 सासादन गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 9 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर सासादन गुणस्थान में अनन्तानुबन्धी क्रोध-मान-माया-लोभ, एकेन्द्रिय, स्थावर, द्वीन्द्रिय-जाति, त्रीन्द्रिय-जाति और चतुरिन्द्रय जाति, इन नौ प्रकृतियों की व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1834 सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली एक प्रकृति कौन-सी है?

उत्तर सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान में सम्यङ्मिथ्यात्व इस एक प्रकृति की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1835 असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होनी वाली 17 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में अप्रत्याख्यानावरण क्रोध-मान-माया-लोभ, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक शरीरांगोपांग, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, नरकायु, देवायु, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय और अयशस्कीर्ति इन 17 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1836 देश संयत गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 8 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर देश-संयत गुणस्थान में प्रत्याख्यानावरण क्रोध-मान-माया-लोभ, तिर्यगायु, उद्योत, नीच गोत्र और तिर्यग्गति इन आठ प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1837 प्रमत्त विरत गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 5 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर प्रमत्त विरत गुणस्थान में आहारक शरीर, आहारक शरीरांगोपांग, स्त्यानगृद्धि, निद्रा-निद्रा और प्रचलाप्रचला इन पाँच प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1838 अप्रमत्त विरत गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 4 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर अप्रमत्त विरत गुणस्थान में सम्यक्त्व प्रकृति, अर्धनाराच संहनन, कीलक संहनन और असंप्राप्तासृपाटिका संहनन, इन चार प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1839 अपूर्वकरण गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 6 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर अपूर्वकरण गुणस्थान में हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्सा इन छह प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1840 अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 6 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में नपुंसक वेद, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, संज्वलन क्रोध-मान-माया इन छह प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1841 सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली एक प्रकृति कौन-सी है?

उत्तर सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान में संज्वलन लोभ, इस एक प्रकृति की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1842 उपशांत मोह गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 2 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर उपशांत मोह गुणस्थान में वज्रनाराच और नाराच संहनन, इन दो प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1843 क्षीण मोह गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 16 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर क्षीण मोह गुणस्थान में निद्रा और प्रचला इन दो की उपान्त्य समय में तथा पाँच ज्ञानावरण, पाँच अन्तराय और चार दर्शनावरण इन 14 की अन्तिम समय में इस तरह दोनों मिलाकर 16 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1844 सयोग केवली गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 30 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर सयोग केवली गुणस्थान में वेदनीयकर्म की साता-असाता वेदनीय में से कोई एक, वज्रवृषभनाराच संहनन, निर्माण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुस्वर, दुःस्वर, प्रशस्त विहायोगति, अप्रशस्त

विहायोगति, औदारिक शरीर, औदारिक शरीरांगोपांग, तैजस, कार्मण, समचतुरस्रादि 6 संस्थान (समचतुरस्र, न्यग्रोध परिमण्डल, स्वाति, वामन, कुब्जक और हुण्डक), वर्णादिचार (वर्ण, रस, गंध और स्पर्श), अगुरुलघु, उपघात, परघात, पर्याप्त और प्रत्येक शरीर इन तीस प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1845 अयोग केवली गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति को प्राप्त होने वाली 12 प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर अयोग केवली गुणस्थान में साता-असाता वेदनीय में से कोइ एक प्रकृति, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, सुभग, त्रस, बादर, श्वासोच्छ्वास, आदेय, यशस्कीर्ति, तीर्थंकर और मनुष्यायु इन बारह प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1846 कौन-कौन से गुणस्थानों में कितनी-कितनी प्रकृतियों का उदय होता है?

उत्तर पहले गुणस्थान में 117, दूसरे गुणस्थान में 111, तीसरे गुणस्थान में 100, चौथे गुणस्थान में 104, पाँचवें गुणस्थान में 87, छठे गुणस्थान में 81, सातवें गुणस्थान में 76, आठवें गुणस्थान में 72, नौवें गुणस्थान में 66, दसवें गुणस्थान में 60, ग्यारहवें गुणस्थान में 59, बारहवें गुणस्थान में 57 तेरहवें गुणस्थान में 42 और चौदहवें गुणस्थान में 12 प्रकृतियों का उदय होता है।

प्र.1847 पूर्व-पूर्व के गुणस्थानों की अपेक्षा आगे-आगे के गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों के उदय, उदय व्युच्छित्ति और अनुदय सम्बन्धी संख्या रूप गणित निकालने की विधि क्या है?

उत्तर उदय योग्य प्रकृतियाँ कुल 122 हैं। उनमें से प्रथम गुणस्थान में सम्यङ्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व प्रकृति, आहारक शरीर, आहारक शरीरांगोपांग और तीर्थंकर इन पाँच प्रकृतियों का उदय न होने से 117 का उदय है। उपर्युक्त 5 का अनुदय है और 5 की उदय व्युच्छित्ति है। प्रथम गुणस्थान के उदय 117 में उदय व्युच्छित्ति की 5 तथा नरकगत्यानुपूर्वी को घटाने से द्वितीय गुणस्थान में उदय 111 का है। उदय व्युच्छित्ति की 5 और अनुदय की पाँच ऐसे 10 प्रकृतियों में नरकगत्यानुपूर्वी के मिल जाने अनुदय 11 का और उदय व्युच्छित्ति 9 की है। सासादन की उदय योग्य 111 प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 9 प्रकृतियाँ घटाने से 102 रहीं, परन्तु तृतीय गुणस्थान में मृत्यु न होने से किसी भी आनुपूर्वी का उदय नहीं रहता। नरक गत्यानुपूर्वी पहले से घटी हुई है अतः 3 आनुपूर्वियों के घटाने से 99 रहीं उनमें सम्यङ्मिथ्यात्व प्रकृति के मिल जाने से तृतीय गुणस्थान में उदय 100 का है। पिछले अनुदय की 11 और उदय व्युच्छित्ति की 9 प्रकृतियाँ मिलाने से 20 हुईं उसमें 3 आनुपूर्वी मिलाने और 1 सम्यङ्मिथ्यात्व प्रकृति के घटाने से तृतीय गुणस्थान में अनुदय 22 का है तथा उदय व्युच्छित्ति 1 की है। तृतीय गुणस्थान की उदय योग्य 100 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 1 प्रकृति घटाने से 99 रहीं। इनमें आनुपूर्वी की 4 तथा सम्यक्त्व प्रकृति के मिलाने से चतुर्थ गुणस्थान में उदय योग्य 104 प्रकृतियाँ है। पिछले अनुदय की 22 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 1 प्रकृति मिलाने से 23 हुईं, उनमें से 4 आनुपूर्वी और 1 सम्यक्त्व प्रकृति के घटाने से चतुर्थ गुणस्थान में अनुदय 18 का है और उदय व्युच्छित्ति 17 की है। चतुर्थ गुणस्थान में उदय योग्य 104 प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 17

प्रकृतियाँ घटा देने से पञ्चम गुणस्थान में उदय योग्य 87 प्रकृतियाँ हैं। पिछले अनुदय की 18 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 17 प्रकृतियाँ मिल जाने से पञ्चम गुणस्थान में अनुदय 35 का और उदय व्युच्छित्ति 8 की है। पंचम गुणस्थान की उदय योग्य 87 प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 8 प्रकृतियाँ घटाने तथा आहारक युगल के मिलाने से छठे गुणस्थान में उदय योग्य 81 प्रकृतियाँ हैं। पिछले अनुदय की 35 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 8 प्रकृतियाँ मिलाने और आहारक युगल के घटाने से छठे गुणस्थान में अनुदययोग्य 41 प्रकृतियाँ हैं तथा उदय व्युच्छित्ति 5 की है। छठे गुणस्थान के उदय योग्य 81 प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 5 प्रकृतियाँ कम होने से सप्तम गुणस्थान में उदय योग्य 76 प्रकृतियाँ हैं। पिछले अनुदय की 41 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 5 प्रकृतियाँ मिलाने से सप्तम गुणस्थान में अनुदय योग्य 46 प्रकृतियाँ हैं तथा व्युच्छित्ति 4 की है। सप्तम गुणस्थान की उदय योग्य 76 प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 4 प्रकृतियाँ कम कर देने से अष्टम गुणस्थान में 72 प्रकृतियाँ उदय योग्य हैं। पिछले अनुदय की 46 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 4 प्रकृतियाँ मिल जाने से अष्टम गुणस्थान में अनुदय योग्य 50 प्रकृतियाँ हैं और 6 की उदय व्युच्छित्ति है। अष्टम गुणस्थान की उदय योग्य 72 प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 6 प्रकृतियाँ कम कर देने से नवम गुणस्थान में उदय योग्य 66 प्रकृतियाँ हैं। पिछले अनुदय की 50 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 6 मिला देने से नवम गुणस्थान में अनुदय योग्य 56 प्रकृतियाँ होती हैं और 6 की उदय व्युच्छित्ति है। नवम गुणस्थान की उदय योग्य प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 6 प्रकृतियाँ कम हो जाने से दशम गुणस्थान में उदय योग्य 60 प्रकृतियाँ हैं। पिछले अनुदय की 56 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 6 प्रकृतियाँ मिलाने से दशम गुणस्थान में 62 प्रकृतियाँ अनुदय योग्य हैं और 1 की उदय व्युच्छित्ति। दशम गुणस्थान की उदय योग्य 60 प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 1 प्रकृति कम हो जाने से ग्यारहवें गुणस्थान में उदय योग्य 59 प्रकृतियाँ हैं। पिछले अनुदय की 62 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 1 प्रकृति मिल जाने से ग्यारहवें गुणस्थान में 63 प्रकृतियाँ अनुदय योग्य हैं और 2 की उदय व्युच्छित्ति है। ग्यारहवें गुणस्थान की उदय योग्य 59 प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 2 प्रकृतियाँ कम कर देने से बारहवें गुणस्थान में उदय योग्य 57 प्रकृतियाँ हैं। पिछले अनुदय की 63 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 2 प्रकृतियाँ मिल जाने से बारहवें गुणस्थान में 65 प्रकृतियाँ अनुदय योग्य हैं और 16 की उदय व्युच्छित्ति है। बारहवें गुणस्थान की उदय योग्य 57 प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 16 प्रकृतियाँ कम हो जाने और 1 तीर्थंकर प्रकृति के मिल जाने से तेरहवें गुणस्थान में 42 प्रकृतियाँ उदय योग्य हैं। पिछले अनुदय की 65 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 16 प्रकृतियों के मिलाने और 1 तीर्थंकर प्रकृति के घटाने से तेरहवें गुणस्थान में 80 प्रकृतियों का अनुदय है तथा 30 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति है तेरहवें गुणस्थान की उदय योग्य 42 प्रकृतियों में से उदय व्युच्छित्ति की 30 प्रकृतियाँ कम करने से चौदहवें गुणस्थान में उदय योग्य 12 प्रकृतियाँ हैं। पिछले अनुदय की 80 प्रकृतियों में उदय व्युच्छित्ति की 30 प्रकृतियाँ

मिलाने से चौदहवें गुणस्थान में अनुदय योग्य 110 प्रकृतियाँ हैं और 12 प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति है। इस तरह उदय त्रिभंगी निकालने की विधि समझना चाहिए।

गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों संबंधी बंध, अबंध, व्युच्छित्ति

गुणस्थान	बंध	अबंध	बंध व्युच्छिति	व्युच्छिन्न प्रकृतियाँ
मिथ्यात्व	117	3	16	मोहनीय कर्म की 2, आयु कर्म की 1, नाम कर्म की 13 = कुल 16
सासादन	101	19	25	दर्शनावरण कर्म की 3, मोहनीय कर्म की 5, आयु कर्म की 1, नाम कर्म की 15, गोत्र कर्म की 1 = कुल 25
मिश्र	74	46	0	
अविरत सम्यग्दृष्टि	77	43	10	मोहनीय कर्म की 4, आयुकर्म की 1, नाम कर्म की 5 = कुल 10
संयमासंयम	67	53	4	मोहनीय कर्म की 4 = कुल 4
प्रमत्त संयत	63	57	6	वेदनीय कर्म की 1, मोहनीय कर्म की 2, नाम कर्म की 3 = कुल 6
अप्रमत्त विरत	59	61	1	आयु कर्म की 1 = कुल 1
अपूर्वकरण	58	62	36	दर्शनावरण कर्म की 2, मोहनीय कर्म की 4, नाम कर्म की 30 = कुल 36
अनिवृत्तिकरण	22	28	5	मोहनीय कर्म की 5 = कुल 5
सूक्ष्म साम्पराय	17	103	16	ज्ञानावरण कर्म की 5, दर्शनावरण कर्म की 4, नाम कर्म की 1, गोत्र कर्म की 1, अंतराय कर्म की 5 = कुल 16
उपशांत मोह	1	119	0	
क्षीण मोह	1	119	0	
सयोग केवली	1	119	1	वेदनीय कर्म की 1 = कुल 1
अयोग केवली	0	0	0	

प्र.1848 कर्मों के उदय और उदीरणा में क्या अन्तर है ?

उत्तर आबाधा काल (निरन्तरता का काल) पूर्ण होने पर क्रमशः कर्मों का फल प्राप्त होना उदय कहलाता है और विशिष्ट कारणों से आबाधा काल के पूर्व ही कर्मों का उदय में आ जाना अर्थात् फल मिलने लग जाना उदीरणा कहलाती है।

प्र.1849 कौन-कौन से गुणस्थानों में कितनी-कितनी प्रकृतियों की उदीरणा व्युच्छित्ति होती है?

उत्तर पहले गुणस्थान में 5, दूसरे गुणस्थान में 9, तीसरे गुणस्थान में 1, चौथे गुणस्थान में 17, पाँचवें गुणस्थान में 8, छठे गुणस्थान में 8, सातवें गुणस्थान में 4, आठवें गुणस्थान में 6, नौवें गुणस्थान में 6, दसवें गुणस्थान में 1, ग्यारहवें गुणस्थान में 2, बारहवें गुणस्थान में 16 और तेरहवें गुणस्थान में 39 प्रकृतियों की उदीरणा व्युच्छित्ति होती है।

प्र.1850 कौन-कौन-से गुणस्थानों में कितनी-कितनी प्रकृतियों की उदीरणा होती है?

उत्तर पहले गुणस्थान में 117, दूसरे गुणस्थान में 111, तीसरे गुणस्थान में 110, चौथे गुणस्थान में 104, पाँचवें गुणस्थान में 87, छठे गुणस्थान में 81, सातवें गुणस्थान में 73, आठवें गुणस्थान 69, नौवें गुणस्थान में 63, दसवें गुणस्थान में 57, ग्यारहवें गुणस्थान में 56, बारहवें गुणस्थान में 54, और तेरहवें गुणस्थान में 39 प्रकृतियों की उदीरणा होती है।

प्र.1851 मूल कर्म प्रकृतियों का बंध कौन-कौन-से गुणस्थानों तक होता है?

उत्तर ज्ञानवरणीय कर्म का बंध पहले गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक, दर्शनावरणीय कर्म का बंध पहले गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक, वेदनीय कर्म का बंध पहले गुणस्थान से तेरहवें गुणस्थान तक, मोहनीय कर्म का बंध पहले गुणस्थान से नौवें गुणस्थान तक, आयुकर्म का बंध पहले गुणस्थान से सातवें गुणस्थान तक, नामकर्म का बंध पहले गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक, गोत्रकर्म का बंध पहले गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक और अन्तराय कर्म का बंध पहले गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक होता है।

प्र.1852 मूल कर्म प्रकृतियों का उदय कौन-कौन-से गुणस्थानों तक होता है?

उत्तर ज्ञानावरणीय कर्म का उदय पहले गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक होता है। दर्शनावरणीय कर्म का उदय पहले गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक होता है। वेदनीय कर्म का उदय पहले गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक होता है। मोहनीय कर्म का उदय पहले गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक होता है। आयुकर्म का उदय पहले गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक होता है। नाम कर्म का उदय पहले गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक होता है। गोत्र कर्म का उदय पहले गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक होता है। अंतराय कर्म का उदय पहले गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक होता है।

गुणस्थानों में कर्म प्रकृतियों सम्बन्धी उदय, अनुदय, उदय व्युच्छित्ति

गुणस्थान	उदय	अनुदय	उदय व्युच्छित्ति	व्युच्छिन्न प्रकृतियाँ
मिथ्यात्व	117	5	5	मोहनीय कर्म की 1, नामकर्म की 4 = कुल 5
सासादन	111	11	9	मोहनीय कर्म की 4, नाम कर्म की 5 = कुल 9
मिश्र	100	22	1	मोहनीय कर्म 1 = कुल 1
अविरत सम्यग्दृष्टि	104	18	17	मोहनीय कर्म की 4, आयुकर्म की 2, नाम कर्म की 11 = कुल 17
संयमासंयम	87	35	8	मोहनीय कर्म की 4, नाम कर्म की 2, आयु कर्म की 1, गोत्र कर्म की 1 = कुल 8
प्रमत्त संयत	81	41	5	दर्शनावरण कर्म की 3, नाम कर्म की 2 = कुल 5
अप्रमत्त विरत	76	46	4	मोहनीय कर्म की 1, नाम कर्म की 3 = कुल 4
अपूर्वकरण	72	50	6	मोहनीय कर्म की 6 = कुल 6
अनिवृत्तिकरण	66	56	6	मोहनीय कर्म की 6 = कुल 6
सूक्ष्मसाम्पराय	60	62	1	मोहनीय कर्म की 1 = कुल 1
उपशांतमोह	59	63	2	नाम कर्म की 2 = कुल 2
क्षीणमोह	57	65	16	ज्ञानावरण की 5, दर्शनावरण की 6, अंतराय की 5 = कुल 16
सयोग केवली	42	80	30	वेदनीय की 1, नाम कर्म की 29 = कुल30
अयोग केवली	12	110	22	वेदनीय कर्म की 1, नाम कर्म की 9, आयु कर्म की 1, गोत्र कर्म की 1 = कुल 12

प्र.1853 कर्म-सत्त्व किसे कहते हैं?

उत्तर कर्म बन्ध होने पर अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार कर्म-प्रदेशों का आत्म प्रदेशों के साथ संलग्न रहने को कर्म सत्व कहते हैं।

प्र.1854 कर्म-सत्व की गुणस्थानों की अपेक्षा क्या व्यवस्था है?

उत्तर प्रथम मिथ्यात्व गुणस्थान में तीर्थंकर और आहारक युगल की सत्ता एक साथ नहीं होती। द्वितीय सासादन गुणस्थान में तीर्थंकर प्रकृति और आहारक युगल की सत्ता क्रम से भी नहीं होती और तथा तृतीय मिश्र गुणस्थान में तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता नहीं होती। तात्पर्य यह है कि उपर्युक्त प्रकृति की सत्ता वाले जीवों के उपर्युक्त गुणस्थान नहीं होंगे अर्थात् तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता वाला एवं

आहारकद्विक की सत्ता वाला क्षयोपशमिक सम्यग्दृष्टि जीव सासादन या मिश्र गुणस्थान को प्राप्त नहीं होता है।

प्र.1855 आगम में आयुबन्ध हो चुकने पर सम्यक्त्व, देशव्रत और महाव्रत प्राप्त होने की क्या व्यवस्था है?

उत्तर संसारी जीवों को चारों गतियों सम्बन्धी आयु का बन्ध होने पर सम्यग्दर्शन तो हो सकता है, परन्तु देवायु को छोड़कर अन्य आयु का बन्ध होने पर उस पर्याय में अणुव्रत और महाव्रत नहीं मिल सकते। तात्पर्य यह है कि अविरत सम्यग्दृष्टि नामक चतुर्थ गुणस्थान में नाना जीवों की अपेक्षा भुज्यमान आयु के साथ चारों आयु की सत्ता हो सकती है। विशेष यह है कि देव और नरकगति में मनुष्य और तिर्यंच आयु का ही बन्ध होगा तथा मनुष्य और तिर्यंचों के चारों आयु सम्बन्धी बन्ध हो सकता है। नवीन आयु का बन्ध हो जाने पर एक जीव के बध्यमान और भुज्यमान के भेद से दो आयु की सत्ता हो जाती है। नवीन आयु के बन्ध के पहले एक भुज्यमान आयु की ही सत्ता रहती है। क्षपक श्रेणी वाला जीव तद्भव मोक्षगामी होता है, अतः उसके नवीन आयु का बन्ध नहीं होता। मात्र एक भुज्यमान मनुष्यायु का और बध्यमान देवायु इन दो आयु की सत्ता होगी और अबद्धायुष्क है तो मात्र एक भुज्यमान मनुष्यायु की ही सत्ता होगी। क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कर्म भूमिज मनुष्य को चतुर्थ गुणस्थान से लेकर सप्तम गुणस्थान तक होती है और उसके अनन्तानुबन्धी चतुष्क और मिथ्यात्व, सम्यङ्मिथ्यात्व तथा सम्यक्त्व प्रकृति इन सात प्रकृतियों का क्षय हो जाता है अतः इनकी सत्ता नहीं होती।

प्र.1856 कौन-कौन-से गुणस्थानों में कितनी-कितनी कर्म प्रकृतियों की सत्ता होती है?

उत्तर नाना (अनेक) जीवों की अपेक्षा मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में 148 प्रकृतियों की सत्ता है। सासादन गुणस्थान में तीर्थंकर और आहाद्वय की सत्ता न होने से 145 की सत्ता है। मिश्र गुणस्थान में अनन्तानुबन्धी आदि सात प्रकृतियों की उपशम रूप सत्ता होने से 148 सत्ता है। पञ्चम देशव्रत गुणस्थान में नरकायु की सत्ता न होने से 147 की सत्ता है। प्रमत्तविरत नामक छठे गुणस्थान में नरक और तिर्यञ्च आयु की सत्ता न होने से 146 की सत्ता है। इसी प्रकार अप्रमत्त विरत नामक सप्तम गुणस्थान में भी 146 की सत्ता है। इसी प्रकार अप्रमत्त विरत नामक सप्तम गुणस्थान तक सम्यग्दृष्टि के अनन्तानुबन्धी आदि सप्त प्रकृतियों का अभाव होने से 141 की सत्ता है। अष्टम गुणस्थान में क्षपक श्रेणी वाले के उपर्युक्त सात प्रकृतियों के साथ नरक, तिर्यंच और देवायु का भी अभाव होता है अतः 138 की सत्ता है। अनिवृत्तिकरण नामक नवम गुणस्थान के आरम्भ में भी 138 की सत्ता रहती है। पश्चात् क्षपक श्रेणी वाले मनुष्य के नौ भागों में क्रम से 16, 8, 1, 1, 6, 1, 1, 1 और 1 प्रकृति का क्षय होने से 36 प्रकृतियों का क्षय हो जाता है अतः दसवें गुणस्थान में 102 की सत्ता होती है। दसवें गुणस्थान के अन्त में सूक्ष्म लोभ का भी क्षय हो जाने से बारहवें गुणस्थान में 101 की सत्ता रहती है।

बारहवें गुणस्थान में 16 की सत्त्व व्युच्छित्ति होने से तेरहवें गुणस्थान में 85 की सत्ता होती है। तेरहवें गुणस्थान में किसी प्रकृति का क्षय नहीं होता इसलिए चौदहवें गुणस्थान में भी 85 की ही सत्ता रहती है। पश्चात् उपान्त समय में 73 और अन्त समय में 12 प्रकृतियों का क्षय हो जाने से आत्मा सर्व कर्म विप्रमुक्त हो जाती है। उपशम श्रेणी वाला क्षायिक सम्यग्दृष्टि है और नवीन आयु बन्ध कर चुका है तो उसके 138 + 1 = 139 की सत्ता उपशान्तमोह गुणस्थान तक रहेगी। यदि अबद्धायुष्क है तो 138 की सत्ता होगी यदि द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टि है तो अनन्तानुबन्धी चतुष्क की विसंयोजना होने से 142 की सत्ता रहती है।

प्र.1857 कौन-कौन-से गुणस्थानों में किन-किन कर्म-प्रकृतियों का संवर किस तरह से होता है?

उत्तर आगम में कथित चौदह गुणस्थानों में कर्मास्रव में कारण रूप मिथ्यादर्शन, असंयम (अविरति), प्रमाद, कषाय और योग इनका क्रमशः जैसे-जैसे अभाव होता है, तज्जन्य आस्रव के अभाव में (उस-उस गुणस्थान में आस्रवित होने उतने-उतने कर्मों के रुकने रूप) संवर होता है।

प्र.1858 मिथ्यात्व गुणस्थान में मिथ्यादर्शन के सद्भाव में जिन प्रकृतियों का आस्रव होता है और सासादन गुणस्थान में जिन प्रकृतियों का संवर होता है वे प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर सासादन गुणस्थान में मिथ्यादर्शन के अभाव में मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, नरकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय जाति, द्वीन्द्रिय जाति, त्रीन्द्रिय जाति, चतुरिन्द्रिय जाति, हुण्डक संस्थान, असम्प्रातासृपाटिका संहनन, नरक गति प्रायोग्यानुपूर्वी, आतप, स्थावर, सूक्ष्म अपर्याप्तक, साधारण शरीर इन सोलह प्रकृतियों का संवर होता है।

गुणस्थानों में कर्म प्रकृति संबंधी सत्व, असत्व, सत्व व्युच्छित्ति

गुणस्थान	सत्व	असत्व	सत्व व्युच्छित्ति	व्युच्छिन्न प्रकृतियाँ
मिथ्यात्व	148	0	0	
सासादन	145	3	0	
मिश्र	147	1	0	
अविरत सम्यग्दृष्टि उपशम व क्षयोपशम सम्यक्त्वी	148	0	1	आयु कर्म की 1 नरकायु = 1
क्षायिक सम्यक्त्वी	141	7	1	आयुकर्म की 1 नरकायु = 1

संयमासंयम व क्षयोपशम				
सम्यक्त्वी	147	9	1	आयुकर्म की 1 तिर्यंचायु = 1
क्षायिक सम्यक्त्वी	140	8	1	आयुकर्म की 1 तिर्यंचायु = 1
उपशम व क्षयोपशम सम्यक्त्वी	146	2	0	
क्षायिक सम्यक्त्वी	139	1	0	
अप्रमत्त विरत				
उपशम व क्षयोपशम सम्यक्त्वी	146	2	4	मोहनीय कर्म की 4 = 4
क्षायिक सम्यक्त्वी	139	9	1	आयुकर्म की 1, देवायु =1
अपूर्वकरण उपशम श्रेणी द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी	142	6	0	
क्षायिक सम्यक्त्वी	139	9	0	
क्षपक श्रेणी क्षायिक सम्यक्त्वी	138	10	0	
अनिवृत्तिकरण उपशम श्रेणी द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी	142	6	0	
क्षायिक सम्यक्त्वी	139	9	0	
क्षपक श्रेणी	–	–	–	

गुणस्थान	सत्व	असत्व	सत्व व्युच्छित्ति	व्युच्छिन्न प्रकृतियाँ
क्षायिक सम्यक्त्वी	138	10	36	दर्शनावरण की 3, मोहनीय कर्म की 20, नामकर्म की 13 = कुल 36
सूक्ष्मसाम्पराय उपशम श्रेणी द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी	142	6	0	
क्षायिक सम्यक्त्वी	139	9	0	
क्षपक श्रेणी क्षायिक सम्यक्त्वी	102	46	1	मोहनीय कर्म की 1
उपशांतमोह उपशम श्रेणी द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी	142	6	0	
क्षायिक सम्यक्त्वी	139	9	0	
क्षीणमोह	101	47	16	दर्शनावरण की 6, ज्ञानावरण की 5, अंतराय कर्म की 5 = कुल 16
सयोग केवली	85	63	0	
अयोग केवली	85	63	72	नामकर्म की 70
द्विचरम समय में	85	63	72	नामकर्म की 70, वेदनीय कर्म की 1, गोत्र कर्म की 1 = कुल 72
चरम समय में	93	72	13	वेदनीय कर्म की 1, गोत्र कर्म की 1, आयुकर्म की 1, नामकर्म की 10 = कुल 13

—★—

सिद्धान्त-भूषण पदवी हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र

समय : 15 दिन　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं। ❖ सभी प्रश्नों के उत्तर लाइन वाले पेपर्स पर पेरा बनाकर लिखें। ❖ उत्तर राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही लिखें। ❖ उत्तर लिखकर काटे जाने या घिसे जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

प्र.1. कर्मों के उदय और उदीरणा में क्या अन्तर है?

प्र.2. मूल प्रकृतियों का उदय कौन-कौन से गुणस्थानों तक होता है?

प्र.3. मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में उदय व्युच्छित्ति कौन-सी प्रकृतियों की है?

प्र.4. कर्म सत्त्व का अर्थ क्या है?

प्र.5. गुणस्थानों की अपेक्षा कर्म सत्त्व कैसे समझना चाहिए?

प्र.6. अणुव्रतों, महाव्रतों का लाभ कौन-कौन सी आयु बंधने के बाद नहीं होता है?

प्र.7. क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कौन-सी भूमि में हो सकती है?

प्र.8. नवीन आयु का बंध किस जीव को नहीं होता है?

प्र.9. क्षायिक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति किस गुणस्थान से किस गुणस्थान तक होती है?

प्र.10. क्षायिक सम्यग्दर्शन में कौन-सी सप्त प्रकृतियों का क्षय होता है?

प्र.11. अविरत सम्यग्दृष्टि जीव के कितनी कर्म प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होती है?

प्र.12. सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान में कितनी कर्म प्रकृतियों का बन्ध छूट जाता है?

प्र.13. प्रमत्त संयत गुणस्थान में कितनी कर्म प्रकृतियों का बन्ध होता है?

प्र.14. सयोगकेवली गुणस्थान में कितनी कर्म प्रकृतियों का अबंध है?

प्र.15. षट्खण्डागम ग्रन्थानुसार किस गुणस्थान में कितने कर्म-प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति होती है?

प्र.16. आहारकद्विक का उदय कौन-से गुणस्थान में होता है?

प्र.17. तीर्थंकर प्रकृति का उदय कौन-कौन से गुणस्थान में होता है?

प्र.18. आनुपूर्वी का उदय किन-किन गुणस्थानों में होता है?

प्र.19. संज्वलन लोभ का उदय किस गुणस्थान से किस गुणस्थान तक होता है?

प्र.20. नरकायु और देवायु का उदय किस गुणस्थान से किस गुणस्थान तक होता है?

आधार : आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित-'आगम-अनुयोग', (प्रश्नोत्तर प्रदीप)

प्रश्न पत्र के पूर्व में दिये गये प्रश्नोत्तरों को पढ़कर उनका चिंतवन-मंथन कर उत्तर-पुस्तिका की पूर्ति करें।

परीक्षार्थी परिचय

नाम.. उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

पता ....

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु परीक्षार्थी के लिए नियमावली

1. उपर्युक्त पदवी हेतु परीक्षार्थी की उम्र कम-से-कम 13 वर्ष पूर्ण और अधिक-से-अधिक आंखों की दृष्टि और लेखनी के स्थिर रहने तक रहेगी।
2. परीक्षार्थी अवश्य रूप से सप्त-व्यसनों अथवा मद्य, मधु, मांस का त्यागी एवं तीर्थंकर व उनकी जिनवाणी का श्रद्धालु होना चाहिए।
3. जो महानुभाव भाव-विज्ञान पत्रिका के सदस्य हैं उन्हें परीक्षा सामग्री प्रश्नोत्तर रूप में भाव-विज्ञान पत्रिका के साथ संलग्न रूप से सतत रूप से चार वर्षों तक प्राप्त होती रहेगी।
4. चारों अनुयोगों के शास्त्रों सम्बन्धी क्रमशः प्राप्त होने वाले प्रश्नोत्तरों तथा अंत में दिये गये प्रश्न-पत्र को स्वयं पढ़कर हल करें और प्रेषित करें तथा अन्य जनों तक भी परीक्षा में भाग लेने की जानकारी अवश्य देने का पूर्ण प्रयास करें। (इस कार्य हेतु इंटरनेट का भी उपयोग कर सकते हैं।)
5. जो महानुभाव पत्रिका के सदस्य नहीं हैं उन्हें प्रश्नोत्तर रूप सामग्री प्राप्त करने हेतु डाक व्यय का भुगतान स्वतः करना होगा।
6. परीक्षार्थी के लिए यह आवश्यक होगा कि वे प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र पाते ही एक माह के अन्तर्गत साफ-सुथरे रजिस्टर के पेपर्स पर पूर्ण शुद्धता और विनयपूर्वक उत्तर लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजने का उपक्रम करें।
7. उत्तर पुस्तिका पर अंक (नम्बर) देने का भाव उत्तर-पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता और लिखावट आदि पर निर्भर करेगा।
8. परीक्षार्थी से ऑनलाइन या फोन द्वारा उत्तर पूछने की पहल भी की जा सकती है अतः अपने पते के साथ ई-मेल एड्रेस या मोबाईल/फोन नं. अवश्य लिखें।
9. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
10. परीक्षार्थी प्रश्नों के उत्तर स्वतः अपनी लिखावट में ही लिखें, अन्य किसी के नाम से उत्तर पुस्तिका भरकर प्रेषित किये जाने पर हमारे परीक्षा बोर्ड द्वारा उसे पदवी हेतु मान्य नहीं किया जावेगा।
11. कदाचित् किसी भव्य द्वारा किसी विशेष परिस्थिति में परीक्षा न दे सकने के कारण और उनके आग्रह किये जाने पर उन्हें प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र उपलब्ध कराये जाने की व्यवस्था परीक्षा-बोर्ड द्वारा की जा सकेगी।
12. सम्यग्ज्ञानभूषण एवं सिद्धांतभूषण पदवी सम्बन्धी उत्तीर्णता प्राप्त करने वाले भव्य गणों को भगवान महावीर आचरण संस्था समिति के द्वारा दो या चार वर्षों में प्रमाण पत्र सह सम्मानित किया जावेगा।
13. प्रश्नोत्तरी व प्रश्न-पत्र मंगवाने हेतु परीक्षा-बोर्ड के निम्न लिखित पदवीधारी से सम्पर्क करें:-

भाव-विज्ञान पत्रिका के	भ. महावीर आचरण संस्था	भ.महावीर आचरण संस्था
प्रधान सम्पादक	समिति के मंत्री	समिति के अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	श्री राजेन्द्र जैन	श्री महेन्द्र जैन
मो. 7222963457	मो. 7049004653	मो. 7999246837

14. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित करें:-

सम्पादक, भाव-विज्ञान, 114, डीके काटेज, ई-8 एक्सटेंशन,
दानापानी रेस्टोरेंट के पास, भोपाल 462026 (म.प्र.)

श्रावकों के चार धर्म

प्रवचनकार : आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज

श्रावकों के चार धर्म होते हैं। सिद्धान्तशास्त्रों में कहते हैं-

''दाणंपूजाशीलमुववासोसावयणं चउव्विहो धम्मो''

अर्थात् दान, पूजा, शील, उपवास ऐसे चार धर्म कहे गये हैं।

दान का बहुत महत्व होता है और दान सत्पात्रों के उपकार के लिए दिया जाता है। दान और पूजा इन दो के माध्यम से श्रावक अपने चौबीस घण्टे में हुये आरंभ-सारंभ से अर्जित पापों को धो लेता है और सातिशय पुण्य का अर्जन भी करता है। बशर्ते वह दान सत्पात्रों को दिया जाये। उसका फल बड़ा ही महान है।

इस दान में किस तरह से लोग अपने जीवन को अर्पित करते हैं? और वह दान का भाव कितना उत्तम होता है। रत्नकरण्डक श्रा. कहते हैं कि-

''आहारौषधयोरप्युपकरणावासयोश्च दानेन।
वैयावृत्यं ब्रुवते चतुरात्मत्वेन चतरस्रा: ॥''

दान चार प्रकार का कहा गया है- आहार दान, औषध दान, उपकरण दान, आवास दान। इस तरह वैयावृत्ति भी चार प्रकार की कही गई है। आहार दान का फल क्या होता है? अकृतपुण्य से धन्यकुमार के बारे में हमने सुना है। इसी तरह और भी वर्णन हमारे शास्त्रों में किया गया है-

''श्रीषेण वृषभसेना, कोण्डेश: सूकरश्च दृष्टान्ता:।
वैयावृत्स्यैतै, चतुर्विकल्पस्य मन्तव्या: ॥''

श्रीषेण राजा, वृषभसेना महिला, कोण्डेश मुनि और सूकर ये चारों दानों में प्रसिद्ध हैं। इन प्राणियों ने दान देकर के अच्छा उत्तम फल को पाया था। श्रीषेण राजा ने नवधा भक्ति पूर्वक साधुओं को आहार दिया था, जिसके फल से वह एक दिन सातिशय पुण्य अर्जन कर शांतिनाथ तीर्थंकर बने। उन्होंने नवधाभक्ति पूर्वक आहार दान देकर वैयावृत्ति की। षोडशकारण भावनाओं में वैयावृत्तकरण भावना से तीर्थंकर प्रकृति का संचय किया और वे 16वें तीर्थंकर शांतिनाथ बने। इसी तरह वृषभसेना महिला ने पूर्वजन्म में औषध दान दिया था जिससे उसे सर्वोषधि शक्ति प्राप्त हुई। कौण्डेश मुनि ने पूर्व जन्म में ग्वाले की अवस्था में मुनिराज को शास्त्रदान दिया था जिससे बहुत पुण्य से महाज्ञानी मुनिराज बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इसी तरह सूकर ने गुफा में बैठे हुए मुनिराज की रक्षा की थी। उसने व्याघ्र से सामना किया और मरण करके स्वर्ग प्राप्त किया। इस तरह से ये चार दृष्टांत प्रसिद्ध हैं।

एक बार एक जिनालय के परिसर में मुनिराज आकर ठहर गये। चूँकि ठण्डी का वक्त था, ज्यादा हवा वगैरह न आये तो वे नीचे स्थान में बैठ गये। प्रातःकाल मंदिर को स्वच्छ करने वाले माली वगैरह आते हैं उसी परिवार की महिला ने वहाँ वृक्ष आदि के पत्ते साफ करते समय देखा कि यहाँ पर कोई नग्न अवस्था में बैठे हैं

और राजा अगर आये तो वे कहेंगे कि ऐसे कौन आकर बैठ गया है, तो शायद राजा को रोष आयेगा। इसलिए उसने सारे पत्तों को इकट्ठा करके मुनिराज के ऊपर डाल दिया। मुनिराज को जब ढक दिया तो धूल के कारण मुनिराज को खाँसी आई और जब खाँसी आई तभी उसी स्थान पर राजा पधारे। राजा जब जिनालय की प्रदक्षिणा दे रहे थे तो देखा कि अरे! पत्तों के बीच कौन हैं? ऐसा लग रहा है जैसे कोई मानव हो।

सेवकों से पत्तों को अलग करने को कहा। पत्ते अलग किये तो देखा कि यहाँ तो मुनिराज हैं...... क्या हो गया? किसने इन पर पत्ते डाल दिये? तब ज्ञात हुआ कि मालिन ने यह काम किया है। पूछा - क्यों ऐसा किया? तो बोली कि हम नहीं जानते थे कि आप इनके भक्त हैं। हमें ऐसा लगा कि शायद आपको इन्हें देखने से मन में ग्लानि होगी तो हमने इन्हें पत्तों से ढंक दिया। राजा बोला कि- ये तो हमारे पूज्य हैं, परमेष्ठी हैं। तुमने अपने जीवन में बहुत बड़ा पाप का कार्य कर लिया। अब तुम मुनिराज से क्षमा मांगो कि कभी ऐसा नहीं करेंगे। उसने क्षमा माँग ली और विचार किया कि मुनिराज को खाँसी आ रही है, हमें पश्चाताप के साथ एक कार्य और करना होगा कि इन्हें औषधि का कार्य करना होगा। चूँकि हम तो आहार नहीं दे सकते परंतु किसी से जाकर दिलावाएँगे। जहाँ मुनिराज का पड़गाहन हुआ वहाँ उसने वह औषधि पहुँचा दी। मुनिराज को खाँसी की औषधि चली और मुनिराज की खाँसी दूर हो गई। ये औषध दान जिसने दिया और उसका फल इतना अच्छा मिला। चूँकि वह सम्यग्दृष्टि महिला नहीं थी अन्यथा वह स्वर्ग में जाती। मिथ्यात्व था फिर भी उसे मानव पर्याय मिल गई और सेठ की कन्या बनी और कन्या होने के बाद उसे एक शक्ति प्राप्त हुई कि उसके स्पर्शित जल से कई लोगों के रोग ठीक हो जाते थे।

एक बार राजा सेना लेकर गया था उसे एक भयानक रोग ने घेर लिया; जो कि ठीक नहीं हो रहा था। किसी ने कहा राजन्! क्षमा कीजिए। चूँकि यह कार्य नहीं करना चाहिए। फिर भी हम कह रहे हैं आप शायद पसंद करें। अपने नगर में एक कन्या है, उसके स्पर्शित जल से कई लोगों के रोग ठीक हो जाते हैं। तो ऐसा जल क्या आपके लिये उपयुक्त होगा? राजा ने कहा- ठीक है। मानो अगर अन्य कोई उपाय नहीं है, तो इसी उपाय को करके देख लेते हैं। जब उस जल को लाया गया और राजा के द्वारा उपयोग किया गया तो शीघ्र ही राजा का रोग ठीक हो गया। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसी भी कोई नारी हमारे नगर में हैं। हम उसे देखना चाहते हैं.... उसे बुलवाया गया। सेठ के साथ कन्या आई और कहा कि तुममें बहुत अच्छे गुण हैं, बहुत अच्छी शक्ति है। हम चाहते हैं कि यह कन्या हमारे ही महल में रहे। हम इसे पटरानी बनाना चाहते हैं। सेठ ने कहा- सोचेंगे! विचार करेंगे। आखिर वह राजा की पटरानी बन ही गई। एक बार हुआ ये कि एक बार एक राजा को जेल में कैद करके रखा था। कुछ वर्षों के बाद उसे खुली जेल में कर दिया उससे कई अनुभव भी प्राप्त करते थे। जब आता था तभी रानी भी आती थी भेंट में बहुत सारी वस्तुएँ भी आती थीं। एक बार दो कम्बल आये। एक पर रानी का नाम डलवाकर रानी को दिया और एक पर उस राजा का नाम डलवाकर राजा को दिया। जब वे राजा से मिलने आते थे तो उस समय दोनों का आपस में कम्बल बदल गया। जो राजा कैद था उसी राजा के पास रानी का कम्बल चला गया। कोई संबंध नहीं लेकिन दूसरे दिन जब आना हुआ और इस राजा की दृष्टि में जब आया कि

मेरी रानी का कम्बल इस राजा के ऊपर है। मन में बहुत विकल्प हुआ और रानी पर बहुत कुपित हुआ। वह सोचता है कि एक तो दण्डित है ही और रानी को तो बाँधकर तालाब में फेंक देंगे। लोगों ने उसी आज्ञा का पालन किया और फेंक दिया। चूँकि रानी के पास तो शील था। जब उसे तालाब में फेंका गया तो देवों ने उसकी रक्षा की और आकर उसे सिंहासन पर बिठा लिया और जयजयकार की।

यह बात राजा तक पहुँची। राजा भागता हुआ आया और देखा कि रानी के पास तो शील है, हमने गलत किया; ऐसे तो देवता आते नहीं हैं.... उसने रानी से क्षमा मांगी फिर उसे राज्य में पधारने को कहा। इसी बीच रास्ते में उन्हें मुनिराज का दर्शन हुआ। वे प्रत्यक्ष ज्ञानी थे। रानी ने पूछ लिया कि मैं निर्दोष होते हुये भी मेरे शील पर दोष क्यों लगा? मुनिराज ने कहा देखो! तुमने पूर्व जन्म में क्या किया था? एक मुनिराज के उपर धूल डाली थी तो उससे ऐसा कर्म बँधा कि उसका फल सबसे पहले मिल गया और उससे भी पहले एक फल ये भी मिला कि जब मुनिराज को खाँसी आई थी तो तुम्हारे निमित्त से दी गई औषधि का फल हुआ कि तुम सेठ की पुत्री हुई और तुम्हें सर्वोषधि शक्ति प्राप्त हुई और मुनिराज के ऊपर धूल डालने से जो उनकी अवज्ञा हुई थी उसका फल तुम्हारे शील पर अपवाद।

एक बार छोटा सा दान देने से इतना बड़ा फल है कि सर्वोषधि शक्ति प्राप्त हुई तो जीवन भर दान देने से कितना बड़ा फल होगा। परीक्षाएँ होती हैं लेकिन सभी परीक्षायें पुण्य के आगे कुछ नहीं कर पातीं। इस महिला का पुनः पूरे विश्व में नाम हो गया कि वह एक ऐसी सती है जो शीलवान है और पहले सर्वोषधि प्राप्ति हेतु उसका नाम था ही। छोटे से औषध दान से इतनी बड़ी विशेषता प्राप्त हुई विचार करो! रोज जो आहारदान आदि देंगे तो उसे कितना बड़ा फल मिलेगा। कहते हैं कि षट् कर्त्तव्य करना ही हमारा प्रमुख धर्म है, अपने कर्त्तव्यों से कभी चूकना नहीं चाहिए-

''देव-पूजा, गुरुपास्ति, स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थाणां, षट्कर्माणि दिने-दिने॥''

जंगल में मुनियों के आहार

प्रतिदिन करने योग्य कर्त्तव्य हमारे आगम में वर्णित हैं। इसलिए तो कहते हैं घर में, नगर में, महल में जब धर्म करते हैं, मंदिर तो पाठशाला है और यहाँ से गये तो प्रयोगशाला शुरु हो जाती है। लेकिन जंगलों में जाकर षट्-कर्म करना बहुत दुर्लभ बात है। जो जंगल में गये हैं वन को अपना आवास बनाया है ऐसे वनवासी प्रतिदिन भोजन के पूर्व द्वाराप्रेक्षण कर रहे हैं। सोच रहे हैं कि हम आहार की बेला को टालकर भोजन करेंगे। कोई मुनिराज आ जायें; हम ऐसे कैसे भोजन कर लें। पहले के काल में सभी लोग शुद्ध वस्त्र पहनकर शुद्ध आहार बनाते थे। पहले के काल में जंगल में हजारों मासोपवासी, ऋद्धिधारी मुनिराज रहते थे। वे लोग प्रतिदिन मुनिराज की प्रतीक्षा में कलश लेकर पड़गाहन हेतु खड़े होते थे। भावना भाते-भाते माला फेरते-फेरते ऐसा पुण्य बढ़ गया कि आज अच्छे शगुन हो रहे हैं, सुबह से कोई भरा कलश लेकर निकल रहा है, अच्छा शगुन से लगा कि लगता है आज हमें कोई अच्छा लाभ जरूर मिल जायेगा और हमारी भावना पूर्ण होगी। ऐसा ही हुआ।

आहार बेला के समय दो मुनिराज आकाश मार्ग से गमन कर रहे थे वे चारणऋद्धिधारी मुनिराज थे। ज्यों ही वे मुनिराज पास में आये और वे बोलने लगे कि हे स्वामी नमोस्तु... हे स्वामी नमोस्तु.... हे स्वामी नमोस्तु इस प्रकार पड़गाहन कर मुनिराज की तीनों लोगों ने प्रदक्षिणा लगाई और पुनः शुद्धि बोलकर घर में प्रवेश कहकर कलश के पानी से पाद प्रक्षाल कराकर उच्चासन ग्रहण कराया। पुनः एक बार पाद प्रक्षालन कर माथे पर चरण रज लगाई और अष्ट द्रव्य से पूजा की। इस तरह नवधाभक्ति की फिर आहार दिखाया और उसके बाद निवेदन किया कि हे स्वामी! मुद्रा छोड़ अंजुली बाँध आहार ग्रहण कीजिए। दोनों मुनिराज कुटिया में आहार ले रहे हैं और तीनों सदस्य आहार दे रहे हैं। अच्छे गद्‌गद् भावों से खुशी को व्यक्त करते हुये कि आज हम धन्य हो गये। कई दिनों के बाद हमारी इच्छा पूर्ण हो रही है। भले ही हमें तपस्या जैसी करने के बाद ये सौभाग्य मिला है लेकिन हमने अपने धर्म को भुलाया नहीं है। चाहे हम नगर में रहें या जंगल में रहें, हमें धर्म को नहीं भूलना है। जितनी कठिनाईयों में हम धर्म पालेंगे उतना अधिक पुण्य प्राप्त होगा। कहते हैं अपने गाँव में महाराजजी का चौमासा करा लो अथवा एक माह मुनिराज का विहार करा लो..... समान पुण्य है। क्योंकि ऐसी विकट परिस्थितियों में भी व्यक्ति समाधान चित्त होकर अपने कर्त्तव्य में लगा रहता है। इसमें और ज्यादा पुण्य मिलता है।

जब आहार हो रहा था वे बोल रहे थे कि महाराजजी और लीजिए.... ये भी लीजिए-2 और उस समय तो देवता गण, जंगल के प्राणी और सभी मनुष्य मुनिराज के आहार देखने आ गये। एक पक्षी ने तो आहार तो देखा ही साथ ही उनके गंधोदक में लोटपोट हो गया तो उसके पंख स्वर्ण के समान हो गये। महाराजजी का आहार पूरा हुआ, सब लोगों ने जयजयकार की, भजन, स्तुतियाँ गाईं और जब महाराजजी जाने लगे तो आशीर्वाद लिया और कहा कि महाराज! कुछ आशीर्वचन बोलिये। महाराज चट्टान पर बैठे और उनके प्रवचन में सभी को अणुव्रत का उपदेश दिया। कई लोगों ने अणुव्रत स्वीकार किये और जिसके पंख स्वर्ण के समान हो गये थे ऐसे उस तिर्यंच प्राणी ने भी अहिंसा को ग्रहण किया और अणुव्रत धारण कर लिये।

तिर्यंच भी संज्ञी पंचेन्द्रि होते हैं, समवशरण में जाते हैं। वे भी अणुव्रत को धारण कर सकते हैं। और बाद में मुनिराज ने आशीर्वाद दिया और आकाशमार्ग से चले गये। पश्चात् देवों ने पंचाश्चर्य कर दिये। पुष्पवर्षा की, गंधोदक वर्षा की, दुन्दुभि वाद्य बजाये, जय जय कार की और रत्नों की वर्षा की। उनका आहार भी अक्षय हो गया मतलब जब तक बनाने वाला स्वयं न खा ले तब तक वह खत्म नहीं होता भले ही पूरे गाँव को अथवा चक्रवर्ती की सेना को भी खिला दें। बड़ा आनंद हुआ, खुशियाँ मनाई और उन्होंने अपने आप को धन्य माना।

देखो! उन्होंने जंगल में जाकर भी अपने धर्म को नहीं छोड़ा। ऐसो महान आत्मा कौन होंगे........

वे थे-राम, लक्ष्मण, सीता। कैसे दण्डकारण्य में उन्होंने कुटिया बनाकर मुनिराज को आहार दिया। ऐसे कौन से मुनिराज होंगे विचार करो..... पहले जो दृष्टांत सुना कि जिसने औषध दान दिया वह नारी अगले जीवन में वृषभसेना बनी। और जिन्होंने आहार दान दिया वे राम, लक्ष्मण, सीता। राम तो मोक्ष गये हैं। सीता स्वर्ग में गई आगे 16 वें स्वर्ग से कभी आयेंगी। वह प्रतीन्द्र हुई उसकी स्त्री पर्याय का छेद हो चुका है। वह आकर चौथे काल

में जन्म लेकर समवसरण में गणधर बनकर मोक्ष को प्राप्त करेगी और लक्ष्मण एक दिन तीर्थंकर बनकर मोक्ष जाएँगे। जिन्हें आहार दिया था ऐसे वे चारणऋद्धिधारी मुनिराज थे- गुप्ति और सुगुप्ति मुनिराज। और वह पक्षी जो राम-सीता की रक्षा करता था वह था- जटायु पक्षी।

दान रूपी वैयावृत्ति से तीर्थंकर जैसे पुण्य का संचय करके उन्हें एक दिन मोक्ष की प्राप्ति होती है। ऐसे चार धर्मों में प्रथम धर्म दान है, इसको अपने जीवन में करते हुये अपने जीवन को सफल बनायें और पुरुषार्थ करें। इसके माध्यम से हम अपने जीवन को महान बना सकते हैं। ऐसे पुण्यवानों के प्रति हम यही भावना भाते हैं कि वे अगले जीवन में तीर्थंकर जैसे पद को प्राप्त करें और ऐसे गुरुओं का सान्निध्य सबको प्राप्त होता रहे और अपने जीवन को आप सभी धन्य करें। कहते हैं-

''चाह गई चिंता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाह है, वह शाहनों का शाह।''

पूजा

दान, पूजा, शील, उपवास ऐसे चार धर्म बताये हैं उनमें दान के बाद पूजा कही गई है। पूजा किसकी की जाती है? पूजा करने वाला कैसा होना चाहिए? पूजा का फल क्या है? और पूजा कैसे की जाती है? पूजा वीतराग भगवान की, वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु की की जाती है। हमारे वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु अथवा पंच परमेष्ठी या नवदेवता; जो कि अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु और जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और जिनचैत्यालय हैं, इनकी पूजा की जाती है। कई पूजायें नैमित्तिक रूप से होती हैं और कई नित्य रूप से भी होती हैं। नित्य पूजा जो प्रतिदिन होती है देव-शास्त्र-गुरु आदि की और नैमित्तिक पूजा कभी भगवान की कल्याणक तिथियों पर या विशेष पर्व दिनों में की जाती है। कुछ पूजायें विशेष आयोजन, विधान आदि में की जाती हैं। इस तरह पूजायें अनेक प्रकार की हैं और वे पूजाएँ द्रव्य रूप और भाव रूप से की जाती हैं।

द्रव्य पूजा में श्रावकों की अपेक्षा अष्ट मंगल द्रव्य हैं और मुनियों की अपेक्षा उनका शरीर, उनके मन-वचन-काय की क्रिया ही द्रव्य पूजा है। द्रव्य पूजा में अष्ट द्रव्य और शरीर आदि का आलंबन होता है और भाव पूजा में अपने मनोभावों को लगाकर तन्मयता के साथ, विशुद्धि पूर्वक, अर्घ की ओर दृष्टि रखते हुये पूजा की जाती है। भाव पूजा में यह आवश्यक नहीं है कि अष्ट मंगल द्रव्य से ही पूजा हो। भगवान के गुणों का स्मरण, भगवान के गुणों का बखान, उनके जीवन में होने वाले ऐसे महान कार्य, उनकी वीतरागता, उनके 1008 लक्षण अनंत गुणों आदि के बारे में चिंतन करना भी पूजा है। भगवान के छियालीस गुण भी होते हैं। हम जब इस प्रकार उनकी पूजा करते हैं तो यह पूजा बहुत महान है। पूजा के माध्यम से एक ही भाव होता है कि-

''वन्दे तद्गुण लब्धये।''

आपके गुणों की प्राप्ति हो इस भावना से हम नमन करते हैं। उनको नमन करना, उनके गुणों की प्राप्ति का एक मुख्य उद्देश्य होता है। पूजा का गुणानुवाद होता है। कई बार इनके आंतरिक गुणों की स्तुति होती है, कई बार शारीरिक गुणों की और कई बार उनके परिकर रूप हैं समवशरणादि की स्मृति की जाती है और वह सब

पूजा के अंदर गर्भित हो जाता है।

पूजा करने वाला किस तरह हो? भगवान के निकट जाने वाला ही सर्वप्रथम व्यसनों का त्यागी होना चाहिए और वह जिनधर्म का पालक होना चाहिए। वह रात्रिभुक्ति, जलगालन आदि की क्रिया जानता है और भी वह धूम्रपान आदि ऐसे नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करता है वह भगवान का अभिषेक, पूजा का अधिकारी होता है, गुरुओं की सेवा का भी अधिकारी होता है। इसी तरह जिसकी चारित्र की या आचरण की शुद्धि है और शरीर, वस्त्रादि की शुद्धि है, निरोगी है और जिसके कुल की भी शुद्धि है अर्थात् अच्छे उच्च कुल में उत्पन्न हुआ है, इसके माध्यम से भी पूजा में विशेषता आती है और भी आगे उसके पास अणुव्रत, प्रतिमा आदि के व्रत हों तो इससे और ज्यादा विशुद्धि पाई जाती है।

पूजा किस प्रकार होती है? अष्ट मंगल द्रव्य पूजा के लिए निमित्त है अथवा जिसके पास जो है जो द्रव्य अपने उपयोग में आती है, और वह प्रासुक है, शुद्ध हैं, निर्मल है ऐसी द्रव्य से पूजा की जाती है। यह द्रव्य अनर्घ्य पद की प्राप्ति की हेतु चढ़ाई जाती है। अमूल्य वस्तु की प्राप्ति के लिये मूल्यवान वस्तु को चढ़ाया जाता है। इस तरह भगवान की पूजा बहुत विवेक के साथ, विशुद्धि के साथ करना चाहिए।

पूजा का फल क्या है? पूजा का फल उनके गुणों की प्राप्ति है, रत्नत्रय की वृद्धि है और यह भावना रखनी चाहिए कि आगे जाकर हमें मोक्ष की भी प्राप्ति हो। अगर इस जीवन में मोक्ष नहीं मिलेगा तो स्वर्ग मिलेगा और वहाँ से आने के बाद मनुष्य पर्याय, उच्च कुल आदि मिलकर अपने जीवन में संयम के भाव भी प्राप्त हो सकते हैं; जिसके माध्यम से हमें उस पूजा से पूज्य बनने का भक्ति से मुक्ति पाने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

पूजा किस भावना से करनी चाहिए? पूज्य निःस्वार्थ भावना से करनी चाहिए। पूजा निःकांक्षित भाव से करना चाहिए, वही भावना वही पूजा सार्थक होती है। अगर भगवान से कुछ माँगना हो तो मात्र छः बाते माँगना चाहिए। इनमें सब कुछ समाया है। ये तो मुनिराज भी माँगते हैं, गुरु भी माँगते हैं। ऐसी वे 6 बातें–

1. दुक्खखओ – दुःखों का नाश हो,
2. कम्मक्खओ – कर्मों का क्षय हो,
3. बोहिलाहो – बोधि की प्राप्ति हो, (रत्नत्रय की प्राप्ति)
4. सुगईगमणं – सुगति में गमन हो,
5. समाहिमरणं – समाधिपूर्वक मरण हो
6. जिणगुण संपत्ति हेतु मज्झं – जिनेन्द्र भगवान के गुणों की प्राप्ति हो।

''एके साधे सब सधै, सब साधे सब जाये''

एक मोक्ष को प्राप्त करने की भावना करो तो आपको सब कुछ मिल जायेगा और अगर सबकुछ मांगने की इच्छा रखोगे तो मुख्य तो छूट ही जायेगा। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम मात्र मोक्ष की ही भावना भायें। वर्तमान में हम देखते हैं कि पुण्य बढ़ने से कितना लाभ होता है। एक बार एक कवि अपने खेत में गये। कुछ

कार्य उन्होंने स्वयं किया और कुछ अपने पुत्र पर सौंप दिया। कि तुम्हें यह काम करना है। पुत्र जाता था और कुछ कार्य देखता था। वे श्रेष्ठी जिनालय में भगवान की पूजा में अनुरक्त रहते थे। प्रातःकाल भगवान का अभिषेक, उनकी पूजा उनका नित्य का कार्यक्रम था यह होने के बाद ही अन्य दूसरा काम देखते थे। एक दिन जब वे जिनालय में पूजा में लीन थे पूजा के मध्य में ही एक खबर आ गई कि आपके पुत्र को सर्प ने डंस लिया है। वे विचार करने लगे कि मैं पूजा को अधूरा छोड़कर नहीं जाऊँगा। चूँकि मुझे मालूम है कि धर्म से पुण्य आता है और पुण्य से रक्षा होती है। अगर मैं यहाँ से चला जाऊँगा तो पुण्य भी क्षीण होने लग जायेगा। तो पुण्य आता रहे और हम अपना कर्त्तव्य करते रहें। वे कहीं नहीं गये आखिर बहुत बुलाने के बाद सेठानी पहुँची और कहने लगी कि अरे! भगवान कहीं नहीं जाएंगे! मंदिर कहीं नहीं जायेगा! गुरु भी कहीं नहीं जाएँगे और यदि बेटा चला गया तो वापस नहीं आयेगा। बहुत कहा लेकिन सुना नहीं, वे तो जाप में लीन रहे। लोगों ने उस पुत्र को लाकर वहीं उनके सामने लिटा दिया। उन्होंने एक ऐसा स्तोत्र रचा जिसमें भगवान आदिनाथ की स्तुति से वह पुत्र उठकर बैठ गया और बहुत अच्छे सबके लिये देखने लगा, जय जिनेन्द्र करने लगा। क्या बात है..... क्या हो गया था तुम्हें?

मुझे नहीं मालूम क्या हो गया था। इतना कह सकते हैं कि किसी प्राणी ने मुझे बाधा लाई थी और मैं मरणासन्न हो गया था। लेकिन ऐसी महिमा हुई कि पिताश्री ने जो आदिनाथ भगवान की स्तुति करके स्तोत्र की रचना की त्यों ही मैं ठीक हो गया। उस स्तोत्र का नाम था विषापाहार स्तोत्र। और वे रचनाकार कवि थे, धनञ्जय कवि। इन्होंने और भी अनेक स्तोत्रों की रचना की है। ऐसे जिनधर्मी; बेटे की परवाह न करते हुए पूजा में लीन रहे। उन्हें विश्वास था कि मेरा पुण्य बढ़ रहा है अपने आप सम्पदा (पुत्र) की प्राप्ति होगी। वे कहते थे कि संसार तो अनादिकाल से मिला है लेकिन भगवान की पूजा इस भव में मिली है। इससे निश्चित रूप से पुण्य बढ़ता है। पूजा के माध्यम से, विषापाहार स्तोत्र के माध्यम से उस पुत्र का विष उतर गया। लोगों को विश्वास आया कि वास्तव में भक्ति की कितनी बड़ी महिमा है। हमें भी ऐसी भक्ति करनी चाहिए। इससे हमारा जीवन मंगलमय होगा। इस पूजा, भक्ति के माध्यम से हम एक दिन मुक्ति को भी प्राप्त कर सकते हैं। यह पूजा हमें किस तरह से महान बनाती है गुरुवर कहते हैं कि–

''गिरि से गिरती धारा पहले, पतली सी ही चलती है।
किंतु अंत में रूप बदलती, सागर में जा ढलती है॥
बल मैं बालक हूँ किस लायक, बोध कहाँ मुझमें स्वामी।
तव गुण गण की थुति करने से, पूर्ण बनूँ तुमसा नामी॥''

शील

प्रत्येक मानव जीवन में शील धर्म का बहुत महत्व है। शील के माध्यम से हमारा जीवन शुद्ध होता है। कई उपलब्धियाँ, कई अतिशय इस शील से ही प्राप्त होते हैं। शील के कई भेद हैं। अपने व्रतों का निर्दोष पालन शील है। मूलव्रत फसल के समान है तो सप्तशील बाड़ के समान है।

मूलव्रत न हों तो शील का महत्व नहीं और पालन न हो तो बाड़ का कोई महत्व नहीं। शील तो सप्त व्यसनों - जुआ, चोरी, शिकार, माँस, शराब, परस्त्री सेवन, वेश्यागमन के त्याग से भी प्रारंभ होता है। यहाँ से ही शील प्रारंभ होता है। यह एक छोटा सा ब्रह्मचर्य (स्वदार संतोष व्रत) का ही रूप है। यह भी एक शील है। इसके बाद अणुव्रतों में शील आता है- ब्रह्मचर्य। वह भी एक शील है। इसके बाद दूसरी प्रतिमा अणुव्रतों की रक्षा के लिये तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत रूप सप्तशील आते हैं। ये सप्तशील अणुव्रतों की रक्षा के लिये होती हैं और सप्तम प्रतिमा में भी शील आते हैं। एक अपेक्षा से 18000 शील होते हैं। ऐसे ही और विशुद्धि को प्राप्त शील गृहत्यागी गुरुओं के पास आते हैं। 18000 शीलों के पालक मुनिराज होते हैं। पूर्ण रूप से सप्त गुण शील के धारी अरहंत भगवान इस जगत् में पूज्य होते हैं। इतना महान यह शील है, इसकी महिमा अपार है। सारे सतिशय, अनेक प्रकार की ऋद्धि-सिद्धियाँ इस शील के माध्यम से होती हैं। शील महान है तो जगत् में नाम है। कहते हैं कि-

''अग्नि में जलवो भलो, भलो पकरवो नाग।
पर्वत से गिरवो भलो, बुरो शील का दाग॥''

अग्नि में जलना ठीक है, पर्वत से गिरना भी ठीक है, नाग को पकड़ लेना भी ठीक है लेकिन शील का अपवाद ठीक नहीं है और ऐसे शील को धारण करने वाले महान आत्मा होते हैं। लंका में रुककर आई सीता को जंगल में छोड़ दिया गया राम को तो विश्वास था, कोई संदेह की बात नहीं है वह बहुत परिपक्व और दृढ़ नारी थी, उन्हें पूर्ण विश्वास था लेकिन लोग क्या कहेंगे, जगत् में कोई परंपरा न बिगड़ जाये कि परघर में रहकर आने के बाद अपने घर में रख लिया, इसलिए जंगल में छोड़ दिया। जंगल में छोड़ने के बाद लवकुश जन्में और उनकी कलायें-पराक्रम जगत् में विख्यात हुईं और एक बार जब राम के ही घोड़े को उन्होंने पकड़ लिया था और इसके बाद युद्ध किया, हनुमान ने राम का साथ न देकर लवकुश का साथ दिया क्योंकि इसमें एक रहस्य की बात थी लड़ाना नहीं था, सुलझाना था सामन्जस्य कराना था। क्योंकि जब पुत्रों की जीत होगी तो माँ घर में आयेगी और बीच में ही समाधान करके भावना लगाई, सारे लोगों में प्रभावना हुई। और सीता को महल में लाने के लिए उत्सुकता बढ़ी फिर भी जनता को और विश्वास आ जाये इसलिए उनकी परीक्षा हुई। सीता पतिव्रता नारी थी। ऐसे अनेक उदाहरण शील की महिमा और उससे हुये अतिशय के हैं।

जब सीता से अग्निकुण्ड में कूदने को कहा। उसने णमोकार पढ़के अग्नि से कहा कि हे अग्नि! अगर मेरे शील में कोई दोष हो तो मुझे भस्म कर देना। और मेरा शील अगर निर्दोष है तो कोई अतिशय कर देना और ज्यों ही वह कूदी तो अग्निकुण्ड जलकुण्ड बन गया और जल से लवालव भर गया। कमल खिल गये और सीता उस पर विराजमान हो गई। ऐसा देवकृत अतिशय देकर राम की आँखों में भी आँसू और सारी जनता में खुशी के आँसू आ गये और सीता से महल में पधारने का आग्रह करने लगे। लेकिन नहीं! संसार की असारता का उसे ज्ञान हो गया, वैराग्य हो गया। और भी वनवास आदि की घटनाओं को सुनकर कईयों को वैराग्य हो गया। सबसे पहले वनवास का सुनकर भरत को वैराग्य हो गया उसके पहले दशरथ तो राज्य छोड़कर जंगल ही चले गये और

दीक्षा ले ली। भरत को राम द्वारा रोका गया कि नहीं भैया! मेरे आने तक तुम रुको। बाद में चले जाना। और कितने ही लोग मिलते रहे, वैरागी बनते रहे। रावण ने जो कृत्य किया उसको देखकर उसके पुत्रों को वैराग्य हो गया। भाई, इन्द्रजीत, कुंभकरण भी चूलगिरि से मोक्ष गये ऐसे कितने ही लोग वैरागी बनते रहे और बाद में लवकुश को भी संसार में कर्मों की बलिहारी को देखकर वैराग्य हो गया फिर सती सीता को भी वैराग्य हो गया और पृथ्वीमति आर्यिका के पास जाकर दीक्षा को ग्रहण कर लिया और घोर तपस्या करके, स्त्री पर्याय का छेद करके सोलहवें स्वर्ग में जाकर प्रतीन्द्र हो गई। पुनः चतुर्थ काल में जन्म लेकर वह जीव समवशरण में गणधर बनकर मोक्ष को भी प्राप्त करेगा। यही है शील की महिमा कि वह शील के माध्यम से अग्निकुण्ड भी जलकुण्ड बन गया। ऐसे अनेक संदर्भ हैं। इन संदर्भों के माध्यम से हमें बहुत अच्छा उपदेश मिलता है। ऐसे संदर्भ हमारे जीवन में वैराग्य को भरने वाले होते हैं।

जब लवकुश ने भी दीक्षा ले ली और घोर तपस्या करके उन्होंने पावागढ़ से मोक्ष प्राप्त किया था। बाद में इन लोगों का पुरुषार्थ देखकर, राज्य में व्यवस्थाओं को ठीक करके एक दिन वे राम भी विरक्ति को प्राप्त हो गये। वे आत्मिक शांति के लिए जंगल में रहे। कभी-कभी नगर में आहार को आते थे। चूँकि राम महापुरुष थे, जब वे नगर में आते थे (महापुरुषों का शरीर आकर्षक होता है, वे कभी वृद्ध नहीं होते, उनकी दाढ़ी-मूँछ भी नहीं होती सदैव जवान के समान बने रहते हैं। उनकी रक्षा हेतु अनेक देवता तत्पर रहते थे) तो गाँव के सभी लोग उनको देखने के इच्छुक रहते थे अपना कार्य छोड़कर मात्र उन्हें ही देखने लग जाते थे। उनके पीछे-पीछे दौड़ने लगते थे। कई बार तो क्या होता था कि महिलायें भी अपने काम को छोड़कर उसी में लग जाती थीं। लेकिन एक घटना ऐसी घटी कि उन्होंने नगर में आना छोड़ दिया और कांतार चर्या का नियम ले लिया कि एक माँ अपने बच्चे को गोद में लिये हुये पर पानी भर रही थी। उस समय बच्चे को नीचे बिठा रखा था और रस्से में फंदा लगाया इतने में राम मुनीश्वर जंगल से आहार चर्या हेतु आये। सभी लोग उन्हें देखने लगे। वह महिला भी उन्हें देखने में मग्न हो गई और वह फंदा जो गागर में लगाना था वह उसने अपने बच्चे के गले में लगा दिया तो बच्चा एक दम रो पड़ा। उतने में राम मुनि की दृष्टि भी उस पर पड़ गई। तब से उन्होंने सोच लिया कि आज से हम नगर में नहीं आएंगे। जंगल में आहार मिलेगा तो करेंगे नहीं तो उपवास कर लेंगे। चूँकि वे तद्भव मोक्षगामी थे, उनका कुछ होने वाला नहीं था। उनके पुण्य से तो देवता भी चौका लगा लेंगे। जब पंचमकाल में ऐसा हो सकता है तो चतुर्थकाल की तो बात ही क्या कहना। राम दीवार की तरफ मुख करके ध्यान में बैठते थे इस तरह उन्होंने मांगीतुंगी से मोक्षपद को प्राप्त किया। वैरागीजन महान चिंतन में उतर जाते हैं। आचार्य कुंदकुंद कहते हैं कि इस संसार के सुख तो अनादिकाल से मिले हैं।

'सुदपदिचिदाणु भूदा सव्वस्स वि काम भोग बंध कहा।

एयत्तस्सुव लम्मो, णवरि ण सुलहो विहत्तस्स॥'

हे जीव! तूने सुनी है, परिचय प्राप्त किया है, अनुभव भी किया है, संसार की कथाओं का काम-भोग-बंध की लेकिन एकत्व विभक्त की जो कथा है उसे तुमने न तो सुना है, न देखा है और ना ही अनुभव किया है। एक

बार तो सुनले और परिचय प्राप्त कर अनुभव भी कर ले। इतनी बड़ी महिमा है- आत्मा की कथा की। इससे आत्मा परमात्मा भी बन जाती है। वैरागी बनकर, कर्मों का क्षय कर उसे मुक्ति की भी प्राप्ति हो जाती है।

राम की ऐसी बड़ी परीक्षा हुई जिसमें वे महान हुये और उनकी परीक्षा के लिये सीता के जीव को भी भाव आया कि अभी उन्हें केवलज्ञान नहीं हो पा रहा है। इनके कर्म नहीं कट पा रहे हैं। थोड़ा और उपसर्ग करना पड़ेगा तब कहीं इनका ध्यान एकाग्र होगा और सोचा कि हम भी इनकी परीक्षा करते हैं। स्वर्ग से उस सीता का जीव जो कि प्रतीन्द्र हुआ था वह उतर कर आया और उसने पुनः सीता जैसा रूप धारण कर लिया और इतना उपसर्ग किया- इतना उपसर्ग किया, तरह-तरह के रूप बनाकर, गीत गाकर उनकी परीक्षा की। लेकिन राम इससे तनिक भी विचलित नहीं हुये उन्होंने अपना शरीर एकदम पत्थर जैसा बना लिया और ऐसा एकाग्र ध्यान हुआ कि उसी समय उन्हें केवलज्ञान हो गया, वे भगवान बन गये। उनकी पूजा हेतु देवता आ गये। उस सीता के जीव ने भी उन्हें प्रणाम कर उनकी पूजा की। धन्य हो ऐसी दृढ़ता, ऐसा ध्यान। बन्धुओं हमें भी गुरुओं के मार्ग पर चलकर ऐसे अतिशय को पाना है और अपने पापों को धोना है। गुरुवर कहते हैं कि-

''मंगलमय जीवन बने, छा जावे सुख छाँव।
मिले परस्पर दिल सभी, टले अमंगल भाव॥''

उपवास

''**उप आत्मनि समीपे वसतीति उपवासः**'' निश्चय से परिभाषा की जाये तो अपनी आत्मा के समीप ही बसना, निवास करना इसका नाम उपवास है। और व्यवहार से देखों तो ''**चतुराहार विसर्जन इति उपवासः**'' चार प्रकार के आहार (खाद्य, स्वाद, लेह्य, पेय) छोड़ना उपवास है। खाद्य में खाने योग्य दाल, रोटी, पकवान आदि, स्वाद में लौंग, इलायची आदि, लेह्य में मलाई, रबड़ी आदि एवं पेय में पानी, दूध आदि आते हैं। ऐसे चारों प्रकार के आहार का जहाँ त्याग होता है वहाँ उपवास होता है लोग जब 24 घण्टे के लिये इन सब चीजों का त्याग कर देते हैं तो उपवास होता है। इसी तरह कोई लोग मात्र पानी लेते हैं और उपवास कहें तो हमारे आगम में ऐसी परिभाषा नहीं है उसका नाम तो अनुपवास है या जलोपवास है वह तो उपवास की साधना है।

उपवास में चारों प्रकार के आहार का त्याग होता है लोग उस दिन कुल्ला भी नहीं करते, मुख में एक बूँद पानी भी नहीं डालते और उपवास के आगे-पीछे के दिन में भी ब्रह्मचर्य धारण करते हैं। इस प्रकार की भावना श्रेष्ठ है। उपवास करते हैं तो उसमें आरंभ-सारंभ का त्याग हो जाता है और भी कोई ऐसे कार्य; जिसमें हिंसा होती हो ऐसे पाँचों पापों का त्याग करें तो बहुत अच्छा है नहीं तो अल्प मात्र में थोड़े उपयोगी परिग्रह और घर में अति आवश्यक कार्य को करते हुए उपवास करते हैं। जो लोग घर में नहीं रहते अर्थात् मुनिसंघों में रहते हैं तो वे लोग तो उस दिन स्नान भी नहीं करते हैं क्योंकि इसमें आरंभ-सारंभ आदि होता है।

उपवास की कई अपेक्षाएँ हैं। जो उपवास शिक्षाव्रत के रूप प्रोषधोपवास के अंतर्गत आता है उसमें लोग उपवास में स्नान नहीं करते। मुनि बनने की शिक्षा के लिये शिक्षाव्रत होते हैं। मुनि-आर्यिकायें स्नान नहीं

करते हैं इसलिए वह भी उपवास के दिन उसकी साधना करते हैं। भाव से स्तोत्र पठन, स्वाध्याय, पूजन आदि करते हैं। उपवास एक सामान्य रूप से होता है, जो सभी लोग करते हैं, लंघन है। विशेषकर कोई ज्वर आदि आ जाये तो उसमें लोग लंघन करते हैं। उपवास करने में स्वस्थता भी आती है। इसलिए महात्मा गाँधी कहते थे कि 15 दिन में एक उपवास जरूर करना चाहिए। हमारे आचार्य भी कहते हैं आठ दिन में एक उपवास करें तो बहुत अच्छा होगा। उपवास के दिन बड़ा हल्कापन लगता है और स्वाध्याय में भी मन लगता है। अन्य कार्यों से निवृत्त हो जाने से विशुद्धि भी बढ़ती है इसलिए उपवास बहुत मंगलमय है। जो 8-15 दिन में उपवास करते रहते हैं उनके रोग अपने आप पलायन हो जाते हैं। हुई बीमारियाँ स्वतः ही नष्ट हो जातीं हैं और स्वस्थ्यता आ जाती है। सामान्यतः स्वस्थता को उपवास किया जाता है। हमारे यहाँ इसे अनशन भी कहा है। अशन नहीं करना ही अनशन है अर्थात् भोजन नहीं करना। आजकल अन्य सम्प्रदाओं में किसी मांग की पूर्ति हेतु अनशन नाम दे दिया। हमें इच्छायें छोड़कर उपवास करना चाहिए कहा है '**इच्छा निरोधो तपः**' इच्छाओं का निरोध करना ही तप है। और '**कर्मक्षयार्थं तप्यते इति तपः**' कर्मक्षय के लिए जो तपा जाये वह तप है। उस दिन कोई खाने-पीने का इच्छा नहीं होनी चाहिए। जब कुछ भी नहीं खाओगे, पिओगे तभी सच्चे उपवास का फल मिलेगा।

एक उपवास अनशन भी कहलाता है। दूसरी प्रतिमा में जो मुनि बनने की शिक्षा हेतु आता है वह प्रोषधोपवास आता है। उसमें आगे पिछे एकाशन और उस दिन उपवास। वह शिक्षाव्रत जो धारण करता है वह मुनि बनने की साधना हेतु प्रोषधोपवास की साधना करता है। प्रोषधोपवास एक प्रतिमा भी है। जिसमें सूक्ष्मता से अपनी सभी आवश्यक क्रियाओं को करते हुये विशुद्धि का पालन करते हुये उस प्रतिमा का पालन करता है। इस तरह उपवास के बहुत अच्छे फल हैं। हमारे जितने भी मुनियों ने दीक्षा ली है। बिना उपवास के दीक्षा नहीं होती, नियम से उपवास करना पड़ता है और दीक्षा के साथ-साथ केवलज्ञान भी बेला-तेला आदि के साथ ही होता है। केवलज्ञान के बाद तो फिर आहार ही नहीं होता। आदिनाथ भगवान ने दीक्षा लेते ही 6 महिने का उपवास धारण किया था। फिर आहार को निकले तो विधि मालूम न होने से आहार नहीं हुआ। फिर वर्धमान चारित्र (जो नियम लिया फिर उससे बढ़कर लेना) के धारक उन मुनिराज ने पुनः 7 महिने 9 दिन के बाद आहार ग्रहण किया था। 13 महिने 9 दिन के बाद जब वे आहार को उठे तो राजा श्रेयांश के यहाँ उन्हें विधि मिल गई। राजाश्रेयांश-सोम ने उन्हें भक्तिभाव पूर्वक पड़गाहन कर आहार दिया वह अक्षय तृतिया का दिन था। वह दिन अक्षय बन गया अक्षय अर्थात् अविनाशी। उस दिन पंचाश्चर्य भी हुये। जयकार की ध्वनि, मंद-मंद सुगंधित वायु, पुष्पवृष्टि, रत्नवृष्टि, दुन्दुभि वाद्य बजे ऐसे पंचाश्चर्य हुये।

उन्होंने किसी बैल के मुंह में 6 घड़ी को मुसिका बाँधा था जिसके फलस्वरूप उन्हें अंतराय कर्म बँध गया जिसका फल उन्हें भोगना पड़ा। ऐसे भगवान आदिनाथ का आदर्श रहा। इसके बाद लगातार उपवास करने वाले महान आत्मा हुये बाहुबली भगवान। इनका आदर्श महान है। इन्होंने दीक्षा लेते ही 1 वर्ष का उपवास धारण कर लिया और 1 वर्ष तक उपवास पूर्वक ध्यान में लीन रहे और केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष पद को प्राप्त किया।

बन्धुओं! हम लोग भी चाहें तो इस तरह की साधना कर सकते हैं। उपवास से शरीर और आत्मा दोनों स्वस्थ होते हैं इसके माध्यम से बहुत कर्मों की निर्जरा होती है यह बहुत बड़ी तपस्या है। कहा है कि-

''तपा हो जो आग में, वहीं स्वर्ण चोखा है।
वक्त जो पहचाने, वही नर अनोखा है।
समय रहते कुछ करलो हे मानव!
वरना हर साँसों में धोखा है......
धर्म कर लो मौका है।''

——★——

दीक्षार्थी-परिचय

नाम	-	ब्र. डॉ. संजय भैया
स्थान	-	गंजबासौदा (म.प्र.)
जन्म तारीख	-	26 जून 1969
शिक्षा	-	एम.बी.बी.एस.
माता	-	समाधिस्थ क्षुल्लिका आत्माश्री माताजी
पिता	-	डॉ. श्री ज्ञानचन्द जी जैन
ब्र.व्रत	-	अतिशय क्षेत्र रामटेक सन् 1983
किससे	-	आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज
प्रतिमा सात कहाँ	-	विदिशा
किससे	-	आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज
प्रतिमा दस कहाँ	-	जबलपुर
किससे	-	आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज
विशेष त्याग	-	मीठा (आजीवन त्याग)
मुनि दीक्षा स्थान	-	जबलपुर (कमानिया गेट, लार्डगंज)
तिथि	-	चैत्र सुदी त्रयोदशी 03-04-2023 महावीर जयंती
दीक्षा गुरु	-	पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज

तीर्थोदय काव्य में ध्यान व सामायिक का महत्त्व

प्रो.(डॉ.) सुधीर जैन

लोक कल्याण की भावना से लिखा गया तीर्थोदय काव्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज की एक अनुपम कृति है, तीर्थोदय काव्य मुहावरा 'गागर में सागर' का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मुनि व श्रावक दोनों के कार्यकलापों का सरलीकरण इस कृति में किया गया है।

परम पूज्य 108 आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज, जिनका जीवन दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत हो, जो कहने की अपेक्षा करके बताये और जो मनुष्य पर्याय में करणीय को आत्मसात कर सतत विकासोन्मुख हो, वास्तव में वही जीवन है, अन्यथा जीवन की घड़ियाँ तो सभी की बीतती ही हैं। ज्ञान-ध्यान में निरत, महापंडित, निस्पृह, साधना में कठोर, वात्सल्य में सुकोमल, सरल प्रवृत्ति, विषयाशाविरक्त, बस यही है इनका अंतर आभास। विद्वत्ता और चारित्र परस्पर पूरक हैं। श्रद्धा इनको दृढ़ता प्रदान करती है और इन तीनों का सामंजस्य जीवन का लक्ष्य-रत्नत्रय बन जाता है। इनका सतत साधन एक दिन साधक को मुक्ति, निर्वाण, सिद्धावस्था तक पहुँचाता है।

इस प्रकार के गुणों से संपन्न आचार्यश्री की लेखनी से "तीर्थोदय काव्य" की रचना हुई है और इसमें जैन दर्शन के गूढ़ से गूढ़ विषयों का सरलीकरण किया गया है और ऐसा ही विषय मुझे मिला **ध्यान व सामायिक**, आइये हम देखते हैं कि आचार्यश्री ने इन विषयों के रहस्य को किस प्रकार खोला है?

जैन दर्शन में सामायिक का अपना महत्त्व है इसका अर्थ है सम आय अर्थात् समस्त प्राणियों के प्रति समता धारणा कर आत्मकेन्द्रित होना, दूसरे शब्दों में इसे समता भी कहते हैं। जैन दर्शन में सामायिक को अलग-अलग ढंग से समझाया गया है जैसे-

* जीवन व मरण में, शत्रु व मित्र में, सुख व दु:ख में समभाव ही सामायिक है।
* सब कार्यों में रागद्वेष छोड़कर समभाव होना और द्वादशांग में श्रद्धान होना ही सामायिक है।
* आत्मा का संयम, नियम व तप में लीन होना सामायिक है।
* अपने इच्छित समय में समस्त कषायों का निरोध करना ही सामायिक है।
* आत्मा के गुणों का चिंतन कर समता का अभ्यास करना ही समायिक है परन्तु तीर्थोदय काव्य में उपरोक्त सभी को शामिल करते हुए आचार्यश्री सामायिक का सरल रूप प्रस्तुत करते हुए चार पंक्तियों में लिखते हैं-

पूर्ण रूप से पञ्च पाप का, त्याग करें मन वच तन से।
छोड़ राग रु द्वेष को करते-चिंतन शिव का चेतन से॥
पद्मासन हो जिनवर-सम या, खड्गासन से ध्यान करें।
दु:ख रूप यह नश्वर भव है, समायिक में ध्यान करें॥ 279॥

और देखिये-

जीव मात्र में समता होना, संयममय शुभ भाव रहे।
ध्यान अशुभ जो आर्त्त रौद्र हैं, उन सबका जो त्याग रहे॥
तथा बंधु अरु बैरी में वा, सुख-दुःख अथवा घर वन में।
नहीं राग व द्वेष धारते, ध्यान करें मुनि चेतन में॥ 579॥

आगे चले तो सामायिक नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के भेद से छः प्रकार की होती है-

* मेरे विषय में कोई शुभ या अशुभ शब्दों का प्रयोग करे तो मुझमें हर्ष विषाद नहीं करना चाहिए, ऐसा विचार करना नाम सामायिक है।

* किसी आकृति या प्रतिमाओं में रागद्वेष की निवृत्ति करना स्थापना सामायिक है।

* सचित्त व अचित्त द्रव्यों में रागद्वेष की निवृत्ति करना द्रव्य सामायिक है।

* अपने निवास स्थान में कषाय का निरोध करना क्षेत्र सामायिक है।

*बसंत आदि छह ऋतुओं विषयक रागद्वेष की निवृत्ति करना काल सामायिक है, और

* जीवन-मरण, लाभ-अलाभ, संयोग-वियोग, मित्र-शत्रु, सुख-दुःख आदि में साम्यभाव तथा सभी जीवों से मैत्री भाव, किसी से बैर भाव नहीं और सावद्य से निवृत्त होना, ये सभी भाव सामायिक के गुण (लक्षण) हैं।

आगे चले तो सामायिक कैसे और कहाँ करें, इस बारें में जैन दर्शन में वर्णन है कि सामायिक करने के लिए क्षेत्र, काल, आसन, मन शुद्धि, वचन शुद्धि और काय शुद्धि का ध्यान रखना चाहिए साथ ही पूर्वाह्न, मध्याह्न और अपराह्न इन तीन कालों में दो से लकर छः घड़ियों तक चारों दिशाओं में तीन-तीन आवर्त करना, कायोत्सर्ग में स्थित होना, पद्मासन या खड्गासन में स्थित होना त्रिकाल वंदना करना तथा समस्त परिग्रहों का त्याग करके मन, वचन, काय को शुद्ध करना ही सामायिक की विधि है, जिसे देखिये प.पूज्य आचार्यश्री अपने तीर्थोदय काव्य में सरलता से वर्णित करते हैं-

कायोत्सर्ग चार बार हो, अरु शुद्ध हो निज परिणाम।
तीन आवर्त चार बार अरु, चतुर् दिशी में चतुर प्रणाम॥
पूर्व दिशा अरु उत्तर दिशी में, गवासन से करें प्रणाम।
खड्गासन या पद्मासन में, वे ध्यावें जिनवर का नाम॥ 280॥

सामायिक में क्या करें तो आचार्यश्री कहते हैं ''ध्यान'' करें। सामायिक ध्यान का श्रेष्ठ साधन है और मन की शुद्धि का श्रेष्ठ उपाय भी है। णमोकार आदि पदों का बार-बार उच्चारण करना भी सामायिक में सहायक होता है, परन्तु सामायिक में शब्दों के उच्चारण की अपेक्षा चिंतन की ही मुख्यता रहती है। कहा गया है 'ध्ये चिन्तयाम्'' ध्ये धातु चिन्तवन अर्थ में आती है। चिंतन अथवा मनन करना ही ध्यान है, दूसरे शब्दों में इसे चित्त की एकाग्रता भी कहते हैं। मन का किसी एक विषय को लेकर उसमें लीन होना ही ध्यान है। ध्यान कैसे हो और उसे कहाँ कब किया जाये? इसको समझाते हुए आचार्यश्री लिखते हैं-

सुबह, मध्य व शाम में, नित्य करें शुभ ध्यान।
योग सुषुम्ना स्वर चले, परम शांति हो जान।
नेत्र खुले या बंद हों, नाशा दृष्टि सुहाय।
अधो दांत फिर उर्ध्व की, पंक्ति सुसौम्य कहाय॥
ध्यान क्षेत्र एकांत हो, बाधाओं से दूर।
जंगल, गृह मंदिर रहे, प्रसन्नता से पूर॥

हम हर समय कुछ न कुछ ध्यान करते ही रहते हैं, वह चाहे शुभ हो य अशुभ। इस दृष्टि से यह दो प्रकार का होता है, प्रशस्त और अप्रशस्त। अप्रशस्त ध्यान में आर्त और रौद्र ध्यान आते हैं इनके अंतर्गत जीव संसारिक अभिप्रायों के लिए ध्यान करता है दूसरी तरफ प्रशस्त ध्यान में धर्म और शुक्ल ध्यान आते हैं, यह शुभ रूप ध्यान होता है। जिस प्रकार योग्य उद्यम बिना पत्थर में सोना दिखाई नहीं देता या लकड़ी में अग्नि दिखाई नहीं देती उसी प्रकार समीचीन ध्यान के बिना हम अपनी आत्मा का अवलोकन नहीं कर सकते हैं अर्थात् ध्यान के बिना सिद्धि संभव नहीं है। दोनों नेत्र, दोनों कान, नाशिका का अग्र भाग, ललाट मुख, नाभि, मस्तक, हृदय, तालू में से किसी एक स्थान को विषय बनाकर ध्यान किया जाता है।

द्रव्य, क्षेत्र, सु-काल सह, भाव जीव जब पाए।
समता ध्यानादिक मिलें, सुयोग्य वह बन जाय॥

सामायिक में एक चित्त भवि, मोहादिक का त्याग करे।
शीत-उष्ण अरु हानि लाभ में, व्याकुलता परिहार करे॥
नहीं इशारा शब्द करे वह, मौन धारता सुखकारी।
उपसर्गों में करे निर्जरा, धन्य साम्य वह सुखकारी॥ 282॥

सब प्राणियों में समताभाव धारण करना, संयम के विषय में शुभ विचार रखना, मन, वचन, काय तथा कृत, कारित, अनुमोदना ऐसे नवकोटि से की हुई मर्यादा के भीतर पांच पापों का त्याग करना ही सामायिक रूपी व्रत है। मैं अशरण रूप, अशुभ रूप, अनित्य, दुखमय और पररूप संसार में निवास करता हूँ और मोक्ष इसके विपरीत है इस प्रकार ध्यान सामायिक में किया जाता है। इसका वर्णन करते हुए आचार्यश्री कहते हैं, ध्यान दीजिये-

यह संसार अपावन जिसमें- नहीं शरण कोई मेरा।
क्षण भंगुर हैं पदार्थ सब ही, अणु मात्र कुछ ना मेरा॥
मोक्ष शरण वह पावन है जो, शाश्वत सुख का धाम रहा।
सामायिक में ध्यान करें भवि, शिव में ही आराम रहा॥ 283॥
प्रतिदिन प्रातः मध्य काल व, सायं में सामायिक से।
मन विशुद्ध हो, व्रत विशुद्ध हों, साम्य मिले सामायिक से॥

सामायिक के समय गृही वह, सूक्ष्म पाप भी तजता है।
अतः वस्त्र से ढके साधु-सम, मुनिपन को वह गहता है॥284॥

सावधानी पूर्वक सामायिक करने के बाद भी अज्ञान या प्रमादवश कुछ ऐसी भूलें हो जाती हैं जो सामायिक को मलिन कर देतीं हैं। इस प्रकार की भूलों को अतिचार के नाम से जाना जाता है, हम इन अतिचारों से कैसे बचें इसको सरल शब्दों में समझाते हुए आचार्यश्री तीर्थोदय काव्य में लिखते हैं कि-

मन वच तन की अशुभ प्रवृत्ति, सामायिक में जब होती।
उत्साहित भी ना होना वा, विस्मृति भी है जब होती॥
ऐसे पञ्च दोष जिन्हें तज, परमेष्ठी का ध्यान करें।
शुभ भावों-सह सदा विरागी, जिनबिम्बों का ध्यान करें॥285॥

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तीर्थोदय काव्य में जैन धर्म से सम्बंधित कठिन से कठिन विषयों को कितनी सरलता से समझाया गया है, यह काव्य केवल सामायिक या ध्यान का काव्य नहीं है अपितु इसमें मुख्य रूप से सोलह कारण व्रतों सहित सभी व्रतों, समाधिमरण, मुनियों/ श्रावकों के षट् आवश्यक, समवशरण आदि का काव्यमय वर्णन है, जो सरल है, पठनीय है। हम भावना भाते हैं कि आचार्यश्री इसी प्रकार जिनवाणी के रहस्यों को जन-जन में प्रकट करते हुए हम सभी का मार्ग प्रशस्त करें और हमारे मोक्ष मार्ग को सुलभ बनायें।

85, डी के कॉटेज, बावड़िया कला, भोपाल 462039 मो.नं.: 9425011357, 8839242707

—★—

ध्यान-दृश्य

आचार्यश्री आर्जवसागरजी

धर्म-शुक्ल ये, हैं शुभ-ध्यान।
इनको ध्याने में कल्याण ॥ 1॥

आज्ञा, अपाय, विपाक, संस्थान।
जानें इनको धर्म सु-ध्यान॥ 2॥

अशुभ व शुभ-मन है संसार।
शुद्ध-मनस् से भव-उद्धार॥ 3॥

भोग त्यागता, योगी कहाय।
योगी वह ध्यानी कहलाय ॥ 4॥

पर को पर व, रज-सम कहना।
मिले स्वतः पर, ना वह गहना॥ 5॥

भोग्य-विषय लड्डू-सम होता।
गुटक सको-न-बाहर होता॥ 6॥

नाशाग्र हि दृष्टि, योगी रखता।
ध्यान-लीन हो, निजसुख चखता ॥ 7॥

बंद पंख खग, नीड में में जाय।
योग-वशी योगि, ध्यानि कहाय ॥ 8॥

साभार : सदाचार सूक्ति काव्य

''सदाचार और सदविचार का स्रोत है, तीर्थोदय काव्य''

एड. देवेन्द्र कुमार जैन (मण्डीदीप वाले)

''**तीर्थोदय काव्य**'' तीर्थंकर बनने का काव्य है। जिसमें षोडस कारण भावनाओं का विशुद्ध वर्णन है, इस काव्य ग्रंथ में मुनिराजों एवं श्रावकों के आचार-विचारों की रत्नत्रयी आराधना के साथ सम्यक् रूपेण विवेचना है।

''**तीर्थोदय काव्य**'' में तीर्थंकर प्रकृति का बंध कराने वाली षोडसकारण भावनाओं का वृहत्‌रूपेण वर्णन किया गया है जिसके चिंतन एवं मनन से सामान्यजन भी सदाचारी जीवन जीते हुए एवं सद्विचारों के साथ आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करके शिवपद को प्राप्त कर सकते हैं, जैसा कि परम पूज्य आचार्य श्री 108 आर्जवसागरजी महामुनिराज ने इस काव्य में रचना की है।

सोलह-कारण तीर्थ-भावना, भाऊँ कर्म नशाने को।
यह तीर्थोदय काव्य लिखूं मैं, भव सुख तज शिव पाने को॥''

''**तीर्थोदय काव्य**'', श्रावकाचार, मूलाचार और अन्य अध्यात्म ग्रंथों का संक्षिप्त एवं सारगर्भित ग्रन्थ है। इसका स्वाध्याय करने से प्रत्येक मानव में सदाचारपूर्वक जीवन जीने की भावना प्रबल होगी। सदाचारी व्यक्ति ही अच्छे विचारों को धारण करता है एवं सम्यक् दर्शन प्राप्त करके अपनी आत्मा के कल्याण की ओर अग्रसर हो सकता है। सदाचार चारित्र की पवित्रता को प्रकट करता है। मनुष्य की मनुष्यता उसके चारित्र में ही निहित होती है। चारित्रहीन व्यक्ति को हमारे समाज में पशु तक कहा गया है। सदाचार के द्वारा ही व्यक्ति महान बनता है। विश्व में प्रसिद्धि पाने वाले जितने भी महापुरुष हुये हैं, उन सभी ने अपने जीवन को सात्विक तरीके से जिया है और सदैव सदाचार का पालन किया। सदाचारी व्यक्ति का प्रभाव इतना व्यापक और असरदार होता है कि उसके सम्पर्क में आने पर दुष्ट से दुष्ट व्यक्ति भी सद्चारित्रधारी बन जाते हैं। स्वावलंबन सदाचार का ही गुण है। सदाचार ही एक ऐसा गुण है, जो मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाता है, कहा भी गया है स्पष्ट है कि धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, लेकिन चारित्र चला गया तो सब कुछ चला गया। ''If character is lost everything is lost'' सदाचारी में सहिष्णुता, क्षमा, संयम, अहिंसा, धैर्य, विनम्रता एवं अकषायी भाव आदि गुण पाये जाते हैं। जो कि ''तीर्थोदय काव्य'' के पाठन से भविजन दिन पर दिन मजबूत व दृढ़ होते जाते हैं जो निश्चित ही एक दिन मुक्ति का कारण बनेंगे।

''**तीर्थोदय काव्य**'' में श्रावकों के बारह व्रतों का अतिचार सहित वर्णन पुनः भावनाओं का भी विशेष वर्णन किया गया है, जिसके चिंतन एवं मनन से सद्विचारों की दृढ़ता के साथ ही सम्यक् दर्शन पुष्ट होता है और व्यक्ति सद्चारी जीवन जीकर अपनी आत्मा का कल्याण कर सकता है।

''**तीर्थोदय काव्य**'' के तृतीय सोपान में आचार्यश्री ने सम्यक् वृत्ति पर सूक्ष्म विवेचना की है, जिससे मनुष्य सद्विचारों के साथ ही सदाचारी जीवन जीने की कला सीख सकता है। मनुष्य में विनय गुण का बड़ा महत्व है, देखिये आचार्यश्री ने इस काव्य में स्पष्ट इंगित किया है कि-

''विनय मोक्ष का द्वार कहा है, जिसके बिना न धर्म मिले।
जहाँ विनय हो मोक्षमार्ग की, वहीं निजातम शर्म मिले॥
सद्दर्शी के विनय-भाव से, आगम-बोध जहाँ मिलता।
सदाचार भी गुणी जनों में, सुखदापूर्ण वहाँ खिलता॥''

कहा भी है कि और भी ''**विद्या ददाति विनयं**''

सद्विचारों को अंगीकृत करते हुये व्यक्ति अपने जीवन में मृदुता और विनय के साथ देव, शास्त्र, गुरु की आराधना करके अपने मनुष्य जीवन को सफल बना सकता है, आचार्यश्री ने इस काव्य में वर्णन किया है कि-

''ज्ञानी की जब विनय न होती, विद्या वहाँ न रहती है।
पुण्य-पाप का ज्ञान नहीं हो, यह जिनवाणी कहती है॥
अभाव रवि का होता है जब, नहीं मार्ग है दिख सकता।
ज्ञान बिना क्या मोक्ष मार्ग में, कभी कौन है चल सकता॥''

विनयपूर्वक देव, शास्त्र, गुरु की आराधना करने वाला मनुष्य सद्विचारों को धारण करते हुए एवं षोडसकारण भावना भाते हुए शिवपद को प्राप्त कर सकता है। आचार्यश्री ने इस काव्य में लिखा है कि-

''दर्श ज्ञान आचरण अरु तप, औपचार है विनय रहीं।
सम्यक् मय व्यवहार रूप हैं, पंच तरह की विनय कहीं॥
इसी विनय में शेष भावना, स्वयं ग्रहण में आती हैं।
भविजन को वे षोडसकारण, मोक्ष महल पहुँचाती हैं॥''

यही नहीं सदाचार के साथ ही सद्विचारी मनुष्य इतना उज्ज्वल चारित्र का धारी होता है कि वह क्रमशः मुनिपद को धारण करके जगत् पूज्य बन जाता है। आचार्यश्री ने चतुर्थ सोपान में ऐसे चारित्रवान की महिमा का वर्णन करते हुए इस काव्य में लिखा है कि-

''मुनियों के जब कहे तत्व को, प्राणी रुचि से पान करे।
चारित-पथ पर चले सदा वह, भक्ति सु-पूजा दान करे॥
निश्चित ही वह भव्य रहा है, शीलवान समकितधारी।
तीन लोक में पूज्य बनेगा, तथा मोक्ष का अधिकारी॥

सद्विचारी ही सम्यग्दृष्टि हो सकता है और सम्यग्दृष्टिजीव के लिये ''तीर्थोदय काव्य'' में सम्यग्दर्शन, सोलहकारण भावनायें, पंचाणुव्रत, गुणव्रत, शिक्षाव्रत, समाधिमरण, समवशरण वर्णन, मुनियों के षट् आवश्यक आदि का सुन्दर एवं सरल भाषा में काव्यमय वर्णन किया गया है, जो बहुत ही प्रेरक एवं कल्याणकारक है।

''**तीर्थोदय काव्य**'' गागर में सागर है, इस कृति के कृतिकार परमपूज्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महामुनिराज, यथानाम तथा चारित्र के धनी, सरल, सहृदयी का हमें सान्निध्य मिला एवं इस

अमूल्य कृति के स्वाध्याय का सौभाग्य मिला और हम धन्य हो गये। ऐसे श्रेष्ठ आचार्य को मेरा मन वचन काय से कोटि-कोटि नमोस्तु। हम सब इस ''तीर्थोदय काव्य'' का स्वाध्याय करें एवं अपने नर तन को धन्य करें। इसी मंगल कामना के साथ।

9, कमर्शियल काम्पलेक्स, सुरेन्द्र पैलेस,
बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी के सामने, भोपाल (म.प्र.) मो.: 7000128732

—★—

दीक्षार्थी- परिचय

नाम	–	ब्र. संजय भैया जी
स्थान	–	विदिशा (म.प्र.)
जन्म स्थान	–	सागर (म.प्र.)
जन्म तिथि	–	18-07-1968
माता	–	श्रीमती स्व. सरोजनी जैन
पिता	–	श्री स्व. मन्नूलाल जी जैन
शिक्षा	–	एम.कॉम
ब्र.व्रत कब	–	2014
कहाँ	–	विदिशा
किससे	–	आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज
प्रतिमा दस	–	जनवरी 2021
कहाँ	–	नेमावर
किससे	–	आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज
मुनि दीक्षा	–	ईसरी पारसनाथ (झारखण्ड)
तिथि	–	कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी 6 नवम्बर 2022
दीक्षा गुरु	–	आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज
विशेष त्याग	–	नमक, शक्कर, हरी आदि (आजीवन)

जिनशासन की महिमा (जिनशासनाष्टक)

(आशीर्वाद- श्रमण संत 108 आचार्यश्री विद्यासागरजी महामुनिराज)

संपूर्ण विश्व को निर्दोष परमात्मा के हित-मित-प्रिय संदेश

-ब्र.अशोक जैन

(संचालक- श्रुतभण्डार, लार्डगंज मंदिर, जबलपुर)

अखिल विश्व में सर्वोत्तम इक, जिनशासन मंगलमय है।
सभी प्राणियों को हितकारी, मार्गप्रदर्शक अनुपम है।
दयाधर्म औ अनेकान्तमय पावन ये जिनशासन
साम्यभाव धारण कर प्राणी, करते हैं निज पर शासन
जैसे बीज कृषक बोते, अंकुर भी होते वैसे
कर्म करे जैसे जो उसका फल भी पाते वैसे
विश्व हितैषी मोक्षमार्ग पर, चल जीवन बदला है
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है॥ 1॥

हर अनर्थ का कारण जनता समझी अभी नहीं है
हिंसा से बढ़कर दुनिया में कोई पाप नहीं है।
महाअधम है, पापी है, मानवता अगर नहीं है,
दानव जैसा करे आचरण, वह इंसान नहीं है।
पशुओं को पीड़ा दे, जग में कब नर सुखी हुआ है?
जिसने पर को खोदी खाई, उसको खुदा कुआँ है।
अपने जैसा सबका सुख-दुख समझो तभी भला है
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है॥ 2॥

तजे दुराग्रह और दुर्गुण को, शांति वही पाता है,
सदा उपासक रहे सत्य का, विजय वही पाता है।
अंच भक्ति से मुक्त हुआ नर, नव जीवन पाता है,
सम्प्रदाय वा पंथ मोह तज, विश्व बंधु भाता है।

सत्य पंथ का अन्वेषक ही मुक्ति सुमार्ग पाता है,
वही संत औ परमात्मा बन, जीवन फल पाता है।
नहीं धर्म की परख यदि तो, होता नहीं भला है,
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है॥ 3॥

वीतराग, सर्वज्ञ, हितैषी बन जो मुक्त हुए हैं,
पहले वे नर हुए, बाद में ही भगवान हुए हैं।
दानवता का त्याग करे, सन्मार्ग वहीं नर पावे,
राग-द्वेष, रिपु को जो जीते महावीर कहलावे।
सुख दुख, जीवन मरण सभी, कर्मों की अमिट निशानी,
इसीलिए चारों गतियों में भटक रहा हर प्राणी।
वह स्वतंत्र जिसने असत्य का ढाया दुष्ट किला है,
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है॥ 4॥

जीव अजीव अनादि से हैं, न उत्पादन होता है,
इनकी पर्यायों का ही केवल परिवर्तन होता है।
यह अनुभव प्रत्यक्ष सभी का, ये ही ज्ञान तुला है,
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है॥ 5॥

शिक्षित और विवेकी जन जो जिनशासन गहते हैं,
दयामयी जिन धर्म शरण पा, भव सगर तिर जाते हैं।
नित्य वस्तु भी अनित्य होती, दृष्टिकोण न्यारा है,
हर विवाद का हल हो सकता है, स्याद्वाद प्यारा है।
अनेकांत सिद्धांत न्याय से हम सबके पट खोलें,
जहां सत्य हो, जहां अहिंसा, सब उसकी जय बोलें।
मोक्षमार्ग पर चलने से ही सबका सदा भला है,
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिये खुला है॥ 6॥

वीतराग विज्ञान सहित जो मार्ग संत दिखलाते,
गुण ग्राहक व भद्र, भव्यजन उसे सदा अपनाते।
धर्म अहिंसा के प्रभाव से, मानव भय बिन जीता,
नहीं सत्य को समझ सका, तो जन्म निरर्थक बीता।
आत्मज्ञान जग में दुर्लभ है, उस बिन सब कुछ रीता,
सत्य अहिंसा जिस जीवन में, उसकी वाणी गीता।
रखो मित्रता हर प्राणी से, होगा तभी भला है
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है॥ 7॥

चेतन तन से पृथक वस्तु है, अटल सत्य इतना है,
यह अनंत संसार किसी के द्वारा नहीं बना है।
और न कोई यहां किसी को सुख दुख का दाता है,
अपना किया उसे मिलता वह, अपना निर्माता है।
नश्वर सुख पाने सभी, करते यत्न अनेक,
जड़ चेतन के ज्ञान बिन, जगता नहीं विवेक॥
''सप्त व्यसन'' के त्याग से, मिटते कष्ट अनंत।
जिन शासन की शरण ले, श्रमण बने भगवंत॥
जिन शासन महिमा बढ़े, रहे सदा जयवंत।
दयामयी जिन धर्म का द्वार कहें अरहंत॥
जिन शासन महिमा समझ, हो अर्ध से दूर।
समीचीन जिन धर्म दे, अशोक शिव सुख पूर॥ 8॥

विद्यासिंधु असीम है, विद्यासिंधु महान।
''विद्यासिंधु'' से मिला, जिनशासन का ज्ञान।

—★—

सतना नगरी में हुए लोक कल्याण महामण्डल विधान मनाया गया 9 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस

सम्मेद शिखर वन्दना उपरांत आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागरजी महामुनिराज ससंघ की भव्य मंगल अगवानी सतना नगरी में हुई। 1 जनवरी 2023 को आचार्यश्री ससंघ के मंगल सान्निध्य में मंदिर जी में विराजमान अति प्राचीन भगवान शांति-कुंथु-अरनाथ की प्रतिमाओं का महामस्तकाभिषेक किया गया। आचार्य भगवन् के सान्निध्य में प्रतिदिन प्रवचन, स्वाध्याय एवं सायंकाल गुरुभक्ति उपरांत बच्चों को धार्मिक पाठशाला का लाभ भी भक्तों को प्राप्त हुआ। सतना नगरी के इस शीतकालीन प्रवास के दौरान गुरुदेव के दर्शनार्थ दिनांक 12 जनवरी 2023 को भारत विकास परिषद दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुरेश जैन R.S.S., व विंध्य प्रांत अध्यक्ष डॉ. शेखर जैन बुढ़ार एवं कोषाध्यक्ष आलोक जैन शहडोल भी पधारे।

षोडसकारण महापर्व के उपलक्ष्य में सतना जैन समाज कमेटी जनों द्वारा गुरुदेव ससंघ के पावन चरणों में श्रीफल भेंट कर लोक कल्याण महामण्डल विधान आयोजन हेतु निवेदन किया गया। दिनांक 18 जनवरी से 26 जनवरी 2023 तक आचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के मंगल सान्निध्य में गुरुवर द्वारा ही रचित यह विधान एवं स्थानीय पं. महेश जी शास्त्री एवं सिद्धार्थ जी सतना के निर्देशन में श्री दि. जैन मंदिर सतना (म.प्र.) में लोक कल्याण मण्डल विधान का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया गया। जिसमें प्रतिदिन अभिषेक, शांतिधारा, नित्य पूजा, गुरु पूजन, विधान उपरांत आचार्य भगवन् की दिव्य देशना का लाभ भी श्रद्धालुओं को प्राप्त हुआ। इसी बीच दिनांक 26 जनवरी 2023 को मंदिर जी स्थापना दिवस के पावन उपलक्ष्य में मूलनायक भगवान 1008 श्री नेमिनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक एवं 64 चँवर अर्पण भी किये गये। एवं बाबू दुलीचंद भवन नवीन नाम तीर्थंकर भवन का लोकार्पण भी किया गया। गुरुदेव ने मंगल प्रवचन में कहा कि हम 'जय भारत..... वंदे भरतेश्वरम्...' कहें। क्योंकि जैन और हिंदु ग्रंथों में वर्णित है कि हम उन (प्रथम तीर्थंकर) ऋषभदेव को नमस्कार करते हैं; जो (चौदहवें कुलकर मनु) नाभिराय और मरुदेवी के पुत्र थे और जिनके ज्येष्ठ पुत्र (षट्खण्ड अधिपति चक्रवर्ती) भरत के नाम से इस देश का नाम भारत पड़ा। भरत; मुनि दीक्षा धारण कर, अरिहंत केवली भगवान बन, मोक्ष प्राप्त कर सिद्ध-पद के स्वामी बने। ऐसे भरत परमेश्वर को हम आज के पावन दिन 'वन्दे भरतेश्वरम्' कह कर प्रणाम करते हैं और विश्व शांति की मंगल कामना करते हैं। ''जय भारत.... वन्दे भरतेश्वरम्....''

दिनाँक 27 जनवरी 2023 को आचार्य भगवंत का 9वाँ अचार्य पदारोहण दिवस भी बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस पावन अवसर पर प्रातःकाल गुरुभक्ति उपरांत संघस्थ सभी साधुओं ने आचार्य भगवन् की प्रदक्षिणा लगाई एवं कुछ संस्मरण भी सुने। पश्चात् दिल्ली से पधारे रोहित शेफाली जैन सपरिवार एवं दमोह आदि से पधारे भक्तों ने भी गुरुदेव का पाद प्रक्षालन, गुरुदेव की प्रदक्षिणा लगाकर आचार्य गुरुदेव की विशेष पूजन भी की। इसी अवसर पर सतना समाज द्वारा **आचार्य भगवन् के जीवन दर्शन पर आधारित 'पारसचंद से आर्जवसागर.....'** ''आर्जवगाथा'' का मंचन किया गया।

दिनाँक 23 जनवरी 2023 को आचार्यश्री ससंघ का मंगल विहार मनटोला, इचौल, मैहर, कैलवारा होते हुए कटनी की ओर हो गया। 3 फरवरी को कटनी नगर स्थित गौशाला में आचार्यश्री ससंघ की गाजों-बाजों के साथ भव्य मंगल अगवानी की गई। जिनालय में विराजमान भ. मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा के दर्शनोपरांत आचार्य भगवन् समक्ष सकल दि. जैन पंचायत कटनी के कमेटीगणों द्वारा कटनी शहर में पधारने हेतु निवेदन किया गया। सभी धर्मप्रेमी बंधुओं को आचार्य भगवन् की अमृतमयी वाणी सुनने का लाभ भी प्राप्त हुआ। एक-दो दिन प्रवास उपरांत आचार्य भगवन् ससंघ की दिनाँक 5 फरवरी 2023 को सायंकाल में बड़े मंदिर जी में भव्य मंगल अगवानी हुई। प्रतिदिन प्रवचन, स्वाध्याय और पाठशाला, कक्षा आदि के माध्यम से लोगों ने धर्मलाभ अर्जन किये और करीब 6-7 दिन के प्रवासोपरांत आचार्य परेमेष्ठी का मंगल विहार अतिशय क्षे. बिलहरी, स्लीमनाबाद, गोसलपुर, सम्मेदगिरि तीर्थ, होते हुये अतिशय क्षेत्र पनागर (आचार्य भगवन् की मोक्षमार्ग की जन्मस्थली) की ओर हो गया।

मोक्षमार्ग की जन्मस्थली- पनागर में पुनः पड़े गुरु चरण

दिनाँक 16 फरवरी 2023 को गुरुदेव ससंघ की भव्य मंगल अगवानी अ.क्षे. पनागर (जहाँ आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया था) में की गई। पनागर एक ऐसी पावन भूमि है, जहाँ से अनेक चेतन कृतियाँ मोक्षमार्ग को प्रशस्त कर रही हैं। देव वन्दना उपरांत आचार्यश्री के मंगल प्रवचन हुए; जिसके दौरान आचार्यश्री ने बताया कि सन् 1984 में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के चरणों में मोक्षमार्ग की ललक के साथ आये थे। यहीं पर ही 17 दिसंबर 1984 को गुरु महाराजजी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत मिला था और आजीवन नमक का त्याग कर दिया था। गुरुदेव ने गुरु समक्ष के अनेक संस्मरण भी सुनाये। करीब 3 दिन के अल्पप्रवास के उपरांत गुरुसंघ का मंगल विहार जबलपुर की ओर हो गया।

जबलपुर नगर में जगह-जगह हुई अभूतपूर्व धर्म प्रभावना

शिवनगर में हुआ सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन

29 फरवरी 2023 को आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ की जबलपुर नगर स्थित शिवनगर में बैण्ड-बाजों के साथ बड़ी ही भव्य मंगल अगवानी की गई; जिसमें पाठशाला के बच्चे, बालिका मण्डल, युवा मण्डल, महिला मण्डल सभी अपनी वेषभूषा में एवं सामान्य जन सभी धवल वस्त्रों में नजर आये। सभी ने अपने-अपने घर के द्वारे पर आचार्यश्री का पाद प्रक्षालन एवं आरती कर अपने आपको कृतकृत्य किया। मंगल प्रवचन के दौरान आचार्यश्री ने शिवनगर का अर्थ बताते हुये कहा कि शिव मतलब मोक्ष अर्थात् मोक्ष जाने की धार्मिक नगरी। आचार्यश्री ने कहा कि शिवपद पर चलने वालों को एक बार जरूर शिवनगर के जिनालय की मनोज्ञ प्रतिमाओं के दर्शन करना चाहिए। प्रवचनोपरांत सकल दि. जैन समाज शिवनगर द्वारा गुरु चरणों में श्रीफल भेंटकर अष्टाह्निका पर्व में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं शिवनगर में ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु निवेदन किया गया। गुरु का आशीर्वाद रूप आश्वासन मिलते ही शिवनगर समाज विधान की तैयारियों में जुट गई। दिनाँक 27 फरवरी से 7 मार्च तक श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। जिसमें

गुरुदेव ससंघ का सान्निध्य एवं पं. अशोकजी दानी का निर्देशन तथा सुधीर जैन एण्ड पार्टी, सागर का संगीत आदि कार्यक्रम रहा। इस विधान के विशेष पुण्यार्जक सिलोंड़ी वाले परिवार जन रहे। प्रतिदिन विधान का आयोजन बड़ी ही भक्तिभाव पूर्वक किया गया; जिसमें सिद्धों की आराधना महाअर्चना की गई। विधान के दौरान संगम नगर, अग्रवाल कॉलोनी, मदर टेरेसा, नक्षत्र नगर, अमृततीर्थ धाम, हनुमान ताल, लार्डगंज, गढ़ा, पुरवा आदि से पधारी कमेटियों ने गुरु सान्निध्य हेतु श्रीफल भेंट कर निवेदन किया यहीं पर गुरु दर्शनार्थ आर्यिकाश्री प्रतिभामति, आर्यिकाश्री सुयोगमति एवं आर्यिकाश्री मार्मिकमति माताजी पधारीं ।

हनुमान ताल में आदिनाथ एवं लार्डगंज में मनाई महावीर जयंती

दिनाँक 14 मार्च 2023 को गुरुदेव ससंघ का विहार शिवनगर से हनुमान ताल (शासनोदय तीर्थ) की ओर हो गया। मंगल अगवानी उपरांत आचार्यश्री ससंघ ने अतिमनोज्ञ, चतुर्थ कालीन चमत्कारी भगवान् आदिनाथ की प्रतिमा सहित सभी प्रतिमाओं के दर्शन किये। पश्चात मंगल प्रवचन भी सुनने का लाभ सभी को प्राप्त हुआ। दिनाँक 16 मार्च 2023 को श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, दरहाई से विशाल शोभायात्रा के साथ भगवान आदिनाथ का जन्मकल्याणक महामहोत्सव गुरुदेव के पावन सान्निध्य में मनाया गया; जिसमें श्रीजी का महामस्तकाभिषेक एवं शांतिधारा, पूजन उपरांत गुरुदेव की अमृतमयी देशना का लाभ भी प्राप्त हुआ। गुरुदेव ने अपने मंगल प्रवचन के माध्यम से भगवान आदिनाथ के जीवन दर्शन को अवगत कराया। हनुमानताल में 3-4 दिन के प्रवासोपरांत गुरुदेव ससंघ का मंगल विहार लार्डगंज की ओर हुआ। लार्डगंज के स्वर्ण मंदिर में आचार्यश्री ससंघ की भव्य मंगल अगवानी की गई। पश्चात् श्री दिगंबर जैन पंचायत सभा एवं लार्डगंज ट्रस्ट कमेटी सहित जगत बहादुर सींग (अन्नू भैया) द्वारा श्री 1008 भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयंती पर गुरुदेव ससंघ से श्रीफल भेंट कर निवेदन किया गया कि हे गुरुवर! इस महावीर जयंती पर आपका सान्निध्य हमें प्राप्त हो।

भगवान महावीर जयंती एवं आचार्यश्री के 36 वें मुनि दीक्षा दिवस पर लाखा भवन में आयोजित हुआ त्रिदिवसीय कार्यक्रम

दिनाँक 30 मार्च से 1 अप्रैल तक विद्यासागर सभागार लाखा भवन में भगवान महावीर के 2622 वें जन्म कल्याणक महोत्सव एवं आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महामुनिराज के 36 वें मुनिदीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय कार्यक्रम क्रमशः महिला संगठन सम्मेलन, युवा संगठन सम्मेलन एवं धार्मिक पाठशाला सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें अखिल भारत वर्षीय महिला परिषद के अनेक अलग-अलग स्थानों से संगठन, जबलपुर नगरीय युवाओं के मण्डल एवं अनेकों पाठशालाओं के नन्हें बच्चों ने अपनी कलाओं का प्रदर्शन कर अपने उद्देश्य और कार्य विधि से अवगत कराया।

कार्यक्रम के दौरान गुरुदेव ने 36 मुख्य विशेष बातों को जन-जन तक पहुँचाया कि- 1. विदेशी वेशभूषा की जगह देश के परिधान के प्रचार-प्रसार हेतु उपदेश 2.फास्टफूड (पैकिट बंद वस्तुओं) के निषेध रूप प्रचार करने का उपदेश 3.धार्मिक पाठशाला में ज्ञानार्जन वृद्धि एवं बच्चों को प्रोत्साहन आदि आदि।

कार्यक्रम में सहभागिता लेने वाले सभी मण्डलों / परिषदों / पाठशालाओं को लार्डगंज स्वर्ण मंदिर

कमेटी एवं पंचायत कमेटी जबलपुर द्वारा मोमेण्टो, शील्ड, प्रशस्ति पत्र, ट्राफी आदि के माध्यम से प्रोत्साहित किया गया एवं कार्यक्रम के अंत में सभी का आभार प्रदर्शन किया गया।

लार्डगंज की धरा पर हुआ गुरु-शिष्य मिलन

करीब 2 वर्ष बाद दिनाँक 28 मार्च 2023 को स्वर्ण मंदिर लार्डगंज की पावन भूमि पर मुनि श्री विलोकसागरजी एवं मुनिश्री विबोधसागरजी महाराज ने अपने गुरु प.पू. आचार्य भगवंत श्री आर्जवसागरजी महाराज के दर्शन कर अपने आप को कृतकृत्य किया। ऐसा अनुपम-अद्भुत दृश्य देखने ही लायक था जब शिष्यों ने अपने गुरु की भक्ति कर प्रदक्षिणा लगाकर गुरुदेव की रत्नत्रय की कुशलता पूछी। मुनिद्वय ने गुरुदेव की चरण वंदना कर अपने आपको धन्य किया।

गुरु करकमलों से महावीर जयंती पर जबलपुर में हुई दिगंबरी जैनेश्वरी दीक्षा

दिनाँक 3 अप्रैल 2023 को महावीर जयंती के पावन दिन आचार्य गुरुदेव श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के 36 वें मुनिदीक्षा दिवस के पावन अवसर पर संघस्थ सभी मुनिराजों, आर्यिकाओं एवं व्रतियों, प्रतिमाधारियों ने गुरुभक्ति उपरांत आचार्य परमेष्ठी की प्रदक्षिणा लगाई एवं गुरुणां गुरु के कुछ संस्मरण सुने। तदोपरांत प्रातःकालीन प्रवचन पूर्व गंजबासौदा से पधारे ब्रह्मचारी डॉ. संजय भैया द्वारा आचार्य परमेष्ठी से श्रीफल भेंट कर दिगंबरी जैनेश्वरी मुनिदीक्षा हेतु निवेदन किया गया और जिसकी सराहना कमेटी और समाज जनों द्वारा भी की गई और सभी व्यवस्थाएं जुटाई गईं। इसी अवसर पर महावीर जयंती के उपलक्ष्य में प्रातःकाल विशाल जुलूस की नगर फेरी निकाली गई; जिसमें सभी मंदिरों से अपने-अपने विमानों में श्रीजी शोभायमान हुये। यह शोभायात्रा हनुमान ताल से प्रारंभ होकर बड़ा फुहारा कमानिया गेट, जबलपुर पहुँची। तदोपरांत ब्रह्मचारी संजय भैया की बिनौली निकाली गई।

दोपहर 3 बजे से गुरु दीक्षा दिवस एवं महावीर जयंती के कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण पूर्वक की गई। पश्चात् आचार्यश्री के दर्शनार्थ पधारीं श्रीमती सुशीलाजी पाटनी धर्मपत्नी अशोकजी पाटनी किशनगढ़, दिल्ली से पधारे लोकेशजी, दमोह से पधारे श्रीमान् राजेश कुमार जी जैन एवं डॉ. अश्विनी जैन जबलपुर और नगर के मुख्य अतिथि गणों का पंचायत कमेटी द्वारा सम्मान किया गया। तदोपरांत श्री जी के अभिषेक पश्चात् महावीर भगवान की मंगलमयी पूजन की गई। आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के 36 वें मुनिदीक्षा दिवस के अवसर पर संघस्थ व्रतियों द्वारा गुरुदेव की संगीतमय पूजन कराई गयी। आचार्यश्री ससंघ के करकमलों में शास्त्र भेंट किये गये। अब हजारों की संख्या में उपस्थित जनसमूह को उस घड़ी का इंतजार था; जब तक व्रती श्रावक रंच मात्र भी परिग्रह न रखते हुए, अपना जीवन गुरु चरणों में समर्पित कर निर्ग्रंथ दिगंबरी दीक्षा धारण करता है और अपने आपको मोक्ष प्राप्ति के योग्य बनाता है।

डॉ. ब्र. संजय भैया बने मुनिश्री सानन्दसागरजी महाराज

बाल ब्रह्मचारी संजय भैयाजी गंजबासौदा की गुरुदेव आचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागरजी महामुनिराज के करकमलों से दीक्षा की क्रियाएँ प्रारंभ की गईं। षोडश संस्कारों का आरोपण भी किया गया। पश्चात् आचार्य भगवंत द्वारा नवदीक्षित मुनिराज का नाम मुनिश्री सानन्दसागरजी महाराज रखा गया एवं पिच्छिका, शास्त्र, कमण्डलु रूप संयामोपकरण, ज्ञानोपकरण और शौचोपकरण प्रदान किये गये।

इस दृश्य को देखकर कमानिया गेट बड़ा फुहारा स्थित विशाल पाण्डाल में हजारों की संख्या में उपस्थित जनसमूह में हर्षोल्लास का वातावरण उमड़ गया और जयजयकार की ध्वनि गूँज उठी....

मुनिश्री सानंदसागरजी महाराज की जय।

मुनिश्री सानंदसागरजी महाराज की जय॥

आचार्य भगवंत श्री आर्जवसागरजी महाराज की जय।

इस तरह महावीर जयंती एवं गुरु दीक्षा दिवस के कार्यक्रम के साथ-साथ दिगंबरी जैनेश्वरी मुनिदीक्षा का कार्यक्रम भी सानंद संपन्न हुआ। तदोपरांत दिनाँक 4 अप्रैल 2023 को आचार्य ससंघ (11 पिच्छि) का मंगल विहार लार्डगंज स्वर्ण मंदिर से गढ़ा (मढ़िया जी) की ओर हो गया।

—★—

जल की समस्या? समाधान!

भारतीय जैन संगठन भारत में पानी की कमी को एक गंभीर राष्ट्रीय चिंता का विषय मानता है और वर्तमान में केन्द्रीय / राज्य सरकार के सहयोग से देश के समस्या ग्रस्त प्रथम 100 जिलों को पानी की समस्या खत्म करना चाहता है। वैसे देश में 255 ऐसे जिले चिह्नित किए गए हैं, जहाँ पानी की विकट समस्या है। जहाँ किसान आत्महत्या कर रहे हैं, पशु-पक्षी, मानव का जीवन त्रस्त है।

हमें पानी की बर्बादी को रोकना है। उपलब्ध पानी को संयम से मितव्ययता से प्रयोग करना है तथा वर्षा जल को सहेजना है। वस्तुतः दुनिया को बचाना सबसे बड़ा अध्यात्म है और उसके साथ जैन धर्म में पानी का क्या महत्व है इस बात का उल्लेख भी आप अपने तरीके से कर सकते हैं।

दुनिया में प्रेम के बिना काम चल सकता है लेकिन पानी के बिना नहीं। मध्यप्रदेश में अभी 2047 की जरूरत के हिसाब से आधा ही पानी उपलब्ध है। अतः हमें समय रहते चेत जाना चाहिए। बढ़ती आबादी, गिरता भूजल, सूखते नदी, तालाब, क्षमता से अधिक पानी का दोहन और पानी की बर्बादी जल संकट का प्रमुख कारण है।

आप लोग हाथ धोने, ब्रश करने, नहाते वक्त नलों को खुला छोड़ने की आदत को बदल लें, तो काफी पानी बच सकता है। मध्यप्रदेश में जल जीवन मिशन के तहत रु.50 हजार करोड़ का कार्य चल रहा है, इसमें 46% घरों को नल से जल उपलब्ध कराने के प्रयास किए हैं। प्रथम प्रयास- जो जल उपलब्ध है उसे बचाने का प्रयास होना चाहिए। दूसरा प्रयास- गंदे पानी का उपचार करके उसे फिर उपयोग लायक बनाना भी जरूरी है। तीसरा प्रयास- लाखों लीटर वर्षा जल को सहेजना होगा। भविष्य की चुनौतियों से निपटना है तो हमें उपाय करने होंगे क्योंकि, पानी सीमित है, जो है हमें उसी से काम चलाना है।

डॉ. विमल कुमार जैन
भारतीय जैन संगठन मध्यप्रदेश
संपर्क सूत्र - 9425866231

सम्यग्ज्ञान-भूषण तथा सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री .... जिला ....से भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता प्राप्त है ☐ नहीं है ☐ सम्यग्ज्ञान-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ तथा सिद्धांत-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ प्रस्तुत है। मेरा पता :- ....जिला .... प्रदेश .... पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....फोन नम्बर/ मोबाईल ....ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण हेतु पंजीकृत किया जाता है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला

पिता/पति श्री ....निवासी...

से **भाव विज्ञान पत्रिका** शिरोमणी संरक्षक सदस्य रुपये 50,000/- से अधिक ☐ पुण्र्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- ☐ परम संरक्षक सदस्य रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/-☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन (स्थायी) सदस्यता रुपये 1,500/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पता :- ....

जिला .... प्रदेश ....पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर/ मोबाईल .... ई-मेल .... है।

दिनांक हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोटः- ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर व रसीद प्राप्त कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' 114, डी के काटेज, बावड़ियाकलाँ, दानापानी रेस्टॉरेन्ट के पास, भोपाल-462039 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : प्रधान सम्पादक-डॉ. अजित कुमार जैन - 7222963457, प्रबंध सम्पादक-डॉ. सुधीर जैन - 9425011357

भाव विज्ञान परिवार

✦✦✦✦✦ शिरोमणी संरक्षक ✦✦✦✦✦

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड) ● डॉ. जैन संकेत शैलेष मेहता, सूरत ● श्री जैन श्रेणिक श्रेयस बीएल पचन्ना बैंग्लोर ● श्री प्रवीण जैन महावीर रोडलाइन्स, दमोह ● श्रीमती रजनी इंजीनियर महेन्द्र जैन, श्रीमती अनिता डॉ. (प्रो.)सुधीर जैन, श्रीमती नीलम राजेन्द्र जैन (एक्साइज़), भोपाल ● श्री जैन अतुल, विपुल, कल्पेश रमेशचंद मेहता, अहमदाबाद ● श्री जैन चंदूलाल राजकुमार काला, कोपरगांव ● श्री जैन संजय मित्तल, रामगंज मण्डी (कोटा) ● श्रीमती जैन विद्यादेवी (वैशाली बेन) अश्विन परिख मनन-सलोनी, श्री जैन हर्षद भाई मेहता, सूरत ● जैन सिंघई श्री इंदरचंद दीपक कुमार विजयकुमार जैन, लखनादौन ● श्रीमती विमलादेवी सुपुत्र नरेश-रीता जैन, अजमेर ● श्री राजेश रोहित शोभित सजल जैन फुटेरा, दमोह ● श्री परितोष बसंत जैन, भोपाल ● श्रीमती सुषमा-डॉ.अजित जैन, भोपाल सुपुत्र इंजी. हर्ष-नीतिका, हैदराबाद, इंजी.अपराजित (यू.एस.ए.) ● श्री प्रेमचंद जैन कुबेर, भोपाल ● श्रीमती जैन इन्द्रा देवी सुपुत्र अनिल, राहुल, निखिल बाकलीवाल, उदयपुर, ● श्री हिमांशु कैलाशचंद जैन, गुड़गांव ● श्री जैन बाहुबली पदमराज होळल, दावणगेरे।

✦✦✦✦ परम संरक्षक ✦✦✦✦

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी, ● कटनी: श्री पवन कुमार पंकज कुमार जैन, ● भोपाल : श्री हेमचंद प्रियेश कुमार जैन।

✦✦✦ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✦✦✦

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● रामगंजमण्डी : सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा ● अकलतरा (छ.ग.) : आयुष अजयकुमार जैन ।

✦✦ पुण्यार्जक संरक्षक ✦✦

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली, ● श्री जैन सुबोध सुशील छाबड़ा, राजनांदगांव (छ.ग.) ।

✦ सम्मानीय संरक्षक ✦

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, गोवा ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, डॉ. जयदीप जैन मोनू,भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेशभाई शाह, सूरत ● श्रीमती जैन उषा पदम मलैया, पथरिया (दमोह) ● श्रीमती सरिता मंडल, संरकंडा महिला मण्डल, बिलासपुर।

✦ संरक्षक ✦

● **रीवा:** श्री जैन विजय अजमेरा, डॉ. अश्विनी जैन ● **छतरपुर:** श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● **दिल्ली :** श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● **हस्तिनापुर (मेरठ):** श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर ● **गुड़गांव:** श्री संजय जैन ● **गाजियाबाद :** श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन ● **कलकत्ता:** श्री जैन कल्याणमल झांझरी ● **भोपाल:** श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, ● **कोटा:** श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंजमण्डी ● **गुवाहाटी:** श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी ● **पांडीचेरी :** श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया ● **सूरत :** श्रीमति विमला मनोहर जैन, श्री निर्मल जैन ● **जयपुर :** श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुर:** श्री प्रकाशचंद जैन, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● **इंदौर :** श्री सचिन जैन, स्मृति नगर ● **पथरिया (दमोह) :** श्री मुकेशकुमार जैन (संजय साईकिल) ● **ललितपुर :** श्री अनिल जैन 'अंचल' ● **बिलासपुर :** श्रीमती संध्या दिनेश जैन।

✦ विशेष सदस्य ✦

● **दमोह :** श्री मनोज जैन दाल मिल ● **अजमेर :** श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● **सूरत :** श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी ● **भोपाल:** श्री राजकुमार जैन, बिजली नगर ● **कटनी :** श्री शुभमकुमार सुभाषचंद जैन, ● **पन्ना :** श्री महेन्द्र जैन, पवई ● **डोंगरगांव (छ.ग.):** श्री सौरभ जैन सेठ ● **जबलपुर:** श्री दिलीप कुमार जैन ।

✦ नवागत सदस्य ✦

● **जबलपुर :** श्री प्रदीप जैन (रद्दीवाले), श्री जैन अशोक बड़कुल, श्री जैन प्रशांत कुमार बड़कुल, श्री विमलकुमार जैन (रूपकिरण), श्री जैन संतोष सिंघई, श्री राकेश जैन (पंचम), श्री स्नेह जैन, ● **बनगांव (दमोह) :** श्री मनीष जैन।

सन् 2023 महावीर जयन्ती पर जबलपुर के लाखा भवन में आयोजित युवा सम्मेलन के दौरान उपस्थित युवा समूह।

महावीर जयन्ती के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित महिला संगठन सम्मेलन में उपस्थित महिला समूह।

जबलपुर में आचार्य भगवन् आर्जवसागरजी को आहार देते हुये डॉ.पी.सी. जैन, ब्र. संजय भैया आदि।

लार्डगंज कमेटी के सदस्यगण इंजी. गौरव जैन दमोह (कुण्डलपुर कार्यकर्ता) का सम्मान करते हुये।

महावीर जयन्ती 2023 जबलपुर में दीक्षा पूर्व गुरु समक्ष निवेदन कर अपनी भावना व्यक्त करते हुये बा.ब्र. डॉ. संजय भैया गंजबासौदा।

ब्र. संजय भैया गंजबासौदा पर दीक्षा संस्कार करते हुए आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागरजी महाराज।

महावीर जयन्ती 2023 जबलपुर बड़े फौहारे पर आचार्यश्री आर्जवसागरजी द्वारा ब्र.संजय भैया की मुनि दीक्षा, बने सानंदसागरजी।

कमानिया गेट बड़े फौहारे जबलपुर में महावीर जयंती पर गुरु प्रवचन सुनते हुए उपस्थित जन समूह महावीर जयन्ती सन् 2023

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

प्रति

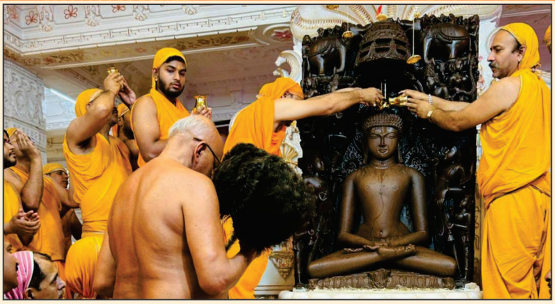

हनुमानताल जबलपुर की अतिशयकारी प्रतिमा, भ.आदिनाथ के दर्शन करते हुये गुरुदेव आर्जवसागरजी महाराज।

आचार्य आर्जवसागरजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये डी.आई.जी. सुनील जैन, सतना।

गुरु प्रवचन पूर्व मंगलाचरण करते हुये जबलपुर नगरीय पाठशाला एवं महिलामण्डल।

आचार्य भगवन् को आहार देते हुये श्रीमान् राजेश कुमार जैन 'आर्जव छाया परिवार' दमोह।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी से आशीर्वाद लेते हुए जगत बहादुर सींग 'अन्नू भैया' जबलपुर।

जबलपुर में गुरुदेव आचार्यश्री आर्जवसागरजी के 36 वें मुनिदीक्षा दिवस पर गुरु संस्मरण सुनते हुये संघस्थ मुनिगण।

बिलहरी (अति. क्षेत्र) की अतिप्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन करते हुये गुरुदेव आर्जवसागरजी।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन मो.:9826240876 द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 7222963457, 9425601161